भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 8 | **मार्च** 2007 | **अंक** 3

पुस्तकें

(एक)

दूर चलकर मील-मीलों,
हैं माँग लाते पुस्तकें।
कर मजूरी, चाकरी कर,
वे खरीद लेते पुस्तकें।
मिठाई नहीं, फैशन नहीं,
हैं मोल लेते पुस्तकें।
जरूरतों में कर कटौती,
क्रय करते मजे में पुस्तकें।
अजूबे नहीं इन दिनों भी,
जिनकी प्रिया हैं पुस्तकें।

(दो)

रैकों पर सजी हैं पुस्तकें,
भूषित अलमारियों में पुस्तकें।
भरी सन्दूक में भी पुस्तकें,
पड़ी दीवान पर हैं पुस्तकें।
सेंटर टेबिल अँटी हैं पुस्तकें,
श्री उनके कक्ष की हैं पुस्तकें।

—डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी

किताबें

देतीं हमको ज्ञान किताबें
कई गुणों की खान किताबें।
विद्या और कलाएँ सिखला
दिलवातीं सम्मान किताबें।
दुनिया के अच्छे कामों का
करती हैं गुणगान किताबें।
रामायण गुरुग्रन्थ बाइबिल
गीता और कुरान किताबें।
दर्शन धर्म विज्ञान संस्कृति का
करतीं सरस बखान किताबें।
इसीलिए तो पूजी जातीं
पातीं कितना मान किताबें।
कोई मित्र नहीं इनसे बढ़
देतीं खुद पहचान किताबें।
सच ही कहा गया, मानव के
लिए हुई वरदान किताबें।

—डॉ० भैरूलाल गर्ग, भीलवाड़ा (राज०)

हे लाज भरे सौन्दर्य : बता दो—
मौन बने रहते हो क्यों ?

जयशङ्कर प्रसादजी के दो अंतरंग मित्र थे—एक विनोदशंकर व्यास जो प्रसादजी के लँगोटिया यार कहे जाते थे और दूसरे रायकृष्णदास जो सम्भ्रान्त अंतरंग मित्र थे।

प्रसादजी की रचनाओं में प्रेम और सौन्दर्य का रसात्मक एवं चित्रात्मक वर्णन का उत्स कहाँ है, उनके निज पारिवारिक जीवन में उसका स्रोत नहीं दिखाई देता। 18 वर्ष की अवस्था में 1908 ई० में प्रसादजी का विन्ध्यवासिनी देवी से प्रथम विवाह हुआ। 1909 ई० में उन्होंने 'इन्दु' का प्रकाशन किया। 1916 ई० में पत्नी का निधन हो गया। उनके मित्र विनोदशंकर व्यास का कथन है—''पहली पत्नी के देहान्त के बाद उनका जीवन बड़ा अस्त-व्यस्त हो गया। वे अपना समय मित्रों और साहित्य में व्यतीत करते रहे।...

....अपनी भाभी के विशेष आग्रह पर उन्होंने फिर से विवाह करना स्वीकार किया।... वह स्त्री एक बार भी ससुराल नहीं आई और सालभर के भीतर ही उसकी मृत्यु हो गई।.... किन्तु भाभी के रोने और वंश चलने के लिए उन्हें तीसरा विवाह करना पड़ा।''

ऐसे व्यथापूर्ण नीरस जीवन में प्रेम सौन्दर्य और रस के लिए अवसर ही कहाँ था। किन्तु उन्होंने अपनी रसमय अन्तश्चेतना को साहित्य में अभिव्यक्त किया। प्रसादजी संगीत प्रेमी थे। नारियल बाजार में उनकी दूकान के ऊपर तथा आसपास राग रागिनियाँ बजती रहती थी, किन्तु प्रसादजी ने उस ओर कभी ध्यान नहीं दिया। विनोदशंकर व्यास ने 13 फरवरी 1936 को प्रसादजी से पूछा था—''आपकी रचनाओं में प्रेम का उज्ज्वल रहस्य छिपा हुआ है, लेकिन मुझे इतने दिनों में भी आपने नहीं बतलाया कि वह अज्ञात प्रेयसी कौन थी?'' व्यासजी ने आगे लिखा है—''उनकी एक ऐसी प्रेयसी थी जिसके प्रति उन्हें सच्चा अनुराग था। अन्त में वही भावनाएँ आध्यात्मिक प्रेम का रूप धारण कर लेती हैं।''

'आँसू' इसका प्रमाण है।

पं० सीताराम चतुर्वेदी जिनकी जन्म शताब्दी इस वर्ष मनायी जा रही है जिन्होंने प्रसादजी के समय उनके 'चन्द्रगुप्त' नाटक में अभिनय किया था, उन्होंने मेरे द्वारा सम्पादित 'अंतरंग संस्मरणों में प्रसाद' में लिखा है—''काशी में श्यामा नाम की विवाहिता गौनहारिन कबीरचौरा मोहल्ले में रहती थी। वह ठुमरी, ठप्पा, कजरी और चैती गाने में दूर-दूर तक विख्यात थी। प्रसादजी को उसकी ठुमरी, चैती और कजरी सुनने का बड़ा चाव था और वे अपने घर पर न सुनकर अन्य स्थानों पर उसके गायन की योजना करते थे जिसका पूरा प्रबन्ध वे और प्रसादजी के लँगोटिया यार विनोदशंकर ही करते थे। ...एक प्रसादजी ही ऐसे थे जिसकी कल्पना में शशि मुख पर घूँघट डाले, आँचल में दीप छिपाये वह निरन्तर आती रहती थी, जिसे उन्होंने काव्य समाधि देकर 'आँसू' में चिरस्मरणीय कर दिया।''

सुभद्राकुमारी चौहान की बहन कमलाकुमारी की बेटी मैत्रेयी सिंह जो होम्योपैथी डॉक्टर डॉ० एच० सिंह की पत्नी थीं, उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है—''प्रसादजी के पुत्र रत्नशंकर के विवाह का अवसर था। गाने वालियाँ एकत्र हो रही थीं। किसी काम से प्रसादजी आँगन का

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

दरवाजा पारकर अन्दर घुसे, वैसे ही गोरी-सी एक लम्बी महिला उठी। उसने एक हाथ फैलाकर प्रसादजी की तरफ गाने के लहजे में कुछ ऐसा गाया कि वे फिर उलटे पाँव वापस चले गये। उस महिला का नाम श्यामा था, वह पेशे से गौनहारिन थी।''

प्रसादजी के अंतरंग रायकृष्णदासजी के अनुसार जब किसी बड़े घर में कोई शुभ कार्य या उत्सव होता, तब उस मांगलिक वातावरण को अन्त:पुर में मुखरित करने के लिए ये बुलाई जातीं। इसी प्रकार के किसी आयोजन में प्रसादजी के घर में एक रूप-सी युवती का प्रवेश हुआ। उसकी कला एवं छटा ऐसी लुभावनी थी कि वह अक्सर बुलाई जाने लगी, नाम था—श्यामा।

ऐसे अवसर भी आए कि प्रसादजी की निगाह उस पर पड़ी और उसकी रसभरी आयत आँखों ने उन्हें आकृष्ट कर लिया। भगवान ने उसे सूरत के साथ-साथ सीरत भी दी थी। वह नि:सन्देह प्रेम परायणा थी, अर्थ परायणता गौण थी।

प्रसादजी के भवन के सामने ही एक विस्तीर्ण कच्चा चबूतरा था। उसके बीच में थी, एक छोटी-सी सुबुक बंगलिया। रंग-बिरंगे सुन्दर-सुन्दर फूलपत्तियाँ वाले गमलों से वहाँ बहुत रमणीयता रहती। उसी में उसे वास मिला।

उन दिनों वाली अधिकांश कुलांगनाओं की मनोवृत्ति यह थी कि यदि उन्हें पति का पूर्ण प्रेम प्राप्त होता, तो उनमें पति की रक्षिता के प्रति सौतिया डाह न होता। उनके पति-प्रेम में आराध्य भाव भी रहता। ऐसे सम्बन्ध के प्रति उनका दृष्टिकोण यह होता कि यदि हमारे प्रति हमारे आराध्य का अनुराग अक्षुण्ण है, तो उनकी मौज में हमें भी सुख है। यही अनुकूल परिस्थिति प्रसादजी के अन्त:पुर में थी। उनकी प्रेमिका के लिए उनकी जनानी ड्योढ़ी का द्वार सदैव उन्मुक्त रहा।

प्रसादजी से सम्बन्ध के पहले वह राय साहब के यहाँ भी किसी मांगलिक अवसर पर, गाने-बजाने को बुलाई गई थी। तब उन्हें भी उसकी एक चितचोर झलक मिली थी।

प्रसादजी जब हवा खाने गाड़ी पर निकलते, तब कभी-कभी मर्दानी पोशाक में उसे भी संग लिए रहते। एक दिन राय साहब के यहाँ फाटक तक लाकर न जाने क्यों सकुच गए, उल्टे पाँव लौट गए। कई दिन बाद खुले।

इस जीवन में वह ढाई-तीन बरस रमे रहे। उभय पक्ष से कभी कोई बेवफाई नहीं हुई। प्रसादजी स्वयमेव निवृत्त-तर्ष हो गए, एक दिन। जब उपरत हुए, तब सदा के लिए उपरत हुए, कभी पीछे मुड़कर न देखा। न ही मन में कोई वासना या पछतावा रहा। उनके व्यक्तित्व की यही विशेषता थी। जीवन-समुद्र थिर हो गया तो सदा के लिए हो गया। वह अपने सारे आभूषण उन्हें सौंपने लगी। उन्होंने बिना किसी रुखाई के दृढ़ता-पूर्वक ना कर दी। झंझटों से वह दूर रहा करते।

1928 में 'आँसू' का प्रथम संस्करण मैथिलीशरण गुप्तजी के चिरगाँव स्थित प्रकाशन संस्थान से प्रकाशित हुआ, मूल्य चार आने, जिस कहा गया, एक सूची-पत्र सा लगता था। मैथिलीशरणजी ने प्रसादजी से 'आँसू' सुनकर गुनगुनाया था—

जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छायी,
दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आयी।

प्रसादजी ने अपनी मर्मव्यथा को 'आँसू' में व्यक्त किया है—

रो-रो कर सिसक-सिसक कर कहता मैं करुण कहानी।
तुम सुमन नोचते सुनते, करते जानी अनजानी।
चातक की चकित पुकारें *श्यामा* ध्वनि तरल रसीली।
मेरी करुणार्द्र कथा की टुकड़ी आँसू से गीली।

इस पद में 'श्यामा' का स्मरण हो आता है।

शशि मुख पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाये।
जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आये॥

जीवन की गोधूली में श्यामा ने प्रसादजी के जीवन में प्रवेश किया।

काली आँखों में कितनी यौवन के मद की लाली,
मानिक मदिरा से भर दी किसने नीलम की प्याली?

प्रिय की आँखें श्याम हैं, रतनारी हैं, उनमें यौवन का मतवालापन न जाने कितनी लालिमा भर रहा है। काली आँखों में गुलाबी रंग छाया देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने नीलम की प्याली (आँख) को माणिक (लाल रंग) की मदिरा से भर दिया हो।

थी किस अनङ्ग के धनु की वह शिथिल शिञ्जनी दुहरी
अलबेली बाहुलता या तनु छवि सर की नव लहरी।

इस पद में दोनों बाहुओं का रूप वर्णन है। प्रिय के बाहुद्वय इतने सुन्दर और अलबेले लगते हैं कि कवि का आश्चर्य पूछ उठता है कि यह किस कामदेव के धनुष की ढीली प्रत्यंचा है? क्या यह लता तो नहीं है अथवा शरीर के रूप-सरोवर में उठने वाली नई लहरें तो नहीं है?

परिरम्भ कुंभ की मदिरा निश्वास मलय के झोंके।
मुखचन्द्र चाँदनी जल से मैं उठता था मुँह धो के॥
जब तुम्हें भूल जाता हूँ कुड्मल किसलय के छल में।
तब कूक हूक सी बन तुम आ जाती रङ्ग-स्थल में।

कवि वेदना को किसी प्रकार कुछ क्षणों के लिए भूल भी जाय तो भी अब वह उसका साथ छोड़ने वाली नहीं है। वह सच्चे अर्थों में उसकी जीवन-संगिनी बन चुकी है। इस सम्बन्ध को स्वीकार करते हुए कवि कहता है कि जब मैं प्राकृतिक सौन्दर्य में (कमल की कोमल पत्तियों के बीच) रम कर तुम्हें (वेदना को सम्बोधित करता है) भूल जाता हूँ तब तुम्हीं सहसा जाग कर (कूक कर) हृदय में हूक पैदा कर छा जाती हो।

सूनी कुटिया कोने में रजनी भर जलते जाना।
लघु स्नेह भरे दीपक का देखा है फिर बुझ जाना॥

तुमने देखा होगा, छोटा-सा दीपक एकाकी कुटिया में रात-भर जलकर सबेरे बुझ गया है संसार में न जाने कितने व्यक्ति एकान्त में संघर्ष-भरे अभावपूर्ण लघु जीवन बिताकर मर जाते हैं।

आँसू का अन्त होता है—

सबका निचोड़ लेकर तुम सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिम-कन-सा आँसू इस विश्व सदन में।

इस हृदयहीन नीरस और शुष्क वसुधा को करुणा के जल से सींचने से ही शान्ति प्राप्त होगी। जिस प्रकार दिन-भर के ताप से सूखा पृथ्वी-तल प्रभातकालीन हिम-बिन्दुओं की वर्षा से आर्द्र होकर शीतलता का अनुभव करता है उसी प्रकार दु:ख से दग्ध और सुखहीन यह विश्व करुणा के अश्रुजल से आर्द्र होकर मानसिक शान्ति-लाभ करेगा। वह अन्त में अपनी करुण भावना से कहता है कि संसार में सभी के प्रति, जिन्हें तुम्हारी आवश्यकता हो, सदय हो जाना।

दो वर्ष बाद 1928 ई० में 'स्कन्दगुप्त' नाटक प्रकाशित हुआ। 'स्कन्दगुप्त' में कालिदास का प्रतिरूप मातृगुप्त प्रिय को स्मरण करता हुआ कहता है—

संसृति के वे सुन्दरतम क्षण यों ही भूल नहीं जाना।
'वह उच्छृंखलता थी अपनी'-कहकर मन मत बहलाना।
मादकता सी तरल हँसी के प्याले में उठती लहरी।
मेरे निश्वासों से उठकर अधर चूमने को ठहरी।
मैं व्याकुल परिरम्भ-मुकुल में बन्दी अलि-सा काँप रहा।
छलक उठा प्याला लहरी, मैं मेरे सुख को माप रहा।
सजग सुप्त सौन्दर्य हुआ, हो चपल चलीं भौंहें मिलने।
लीन हो गई लहर, लगे मेरे ही नख छाती छिलने।
***श्यामा* का नखदान मनोहर मुक्ताओं से ग्रथित रहा।**
जीवन के उस पार उड़ाता हँसी, खड़ा मैं चकित रहा।
तुम अपनी निष्ठुर क्रीड़ा के विभ्रम से, बहकाने से।
सुखी हुए फिर लगे देखने मुझे पथिक पहचाने-से।
उस सुख का आलिंगन करने कभी भूलकर आ जाना।
मिलन क्षितिज-तट मधु-जलनिधि में मृदु हिलकोर उठा जाना

1932 ई० में प्रसादजी 'लहर' में कहते हैं—

ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक! धीरे-धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अम्बर के कानों में गहरी—
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।

जहाँ साँझ सी जीवन छाया,
ढीले अपनी कोमल काया,
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पाँत घनी रे।

एक दिन रायकृष्णदासजी ने प्रसादजी से श्यामा का पता-ठिकाना पूछा। प्रसादजी ने तटस्थ भाव से कहा—''सुना कि मर गई।''

इस व्यथा को 'लहर' में प्रकाशित इन पंक्तियों में है—

अरे कहीं देखा है तुमने
मुझे प्यार करने वाले को?
मेरी आँखों में आकर फिर
आँसू बन ढरने वाले को?

1936 में उनके निधन के लगभग एक वर्ष पूर्व 'कामायनी' प्रकाशित हुई। 'कामायनी' में 'श्रद्धा', 'लज्जा', 'वासना' सर्ग में चित्रात्मक सौन्दर्य 'श्यामा' की स्मरण करा देता है—

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अर्ध खुला अंग;
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।

—श्रद्धा

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में;
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।

—लज्जा

प्रसादजी की प्रेयसी प्रसादजी की अन्य रचनाओं में भी परिलक्षित होती है—प्रसादजी की कहानी 'चूड़ीवाली' की कल्पना उसी की परछाई है।

'कंकाल' में घण्टी कहती है—

पिया के हिया में परी है गाँठ
मैं कौन जतन से खोलूँ?

अन्त में प्रसादजी की प्रेयसी उन्हीं के शब्दों में—

तुम स्पर्शहीन अनुभव सी
नन्दन-तमाल के तल से,
जग छा दो श्याम-लता सी
तन्द्रा पल्लव विह्वल से।

—आँसू

—पुरुषोत्तमदास मोदी

लोकप्रियता नहीं, पाठकप्रियता

—कान्तिकुमार जैन

हिन्दी साहित्य के अधिकांश साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य का काल- विभाजन साहित्य की प्रवृत्तियों के आधार पर किया है किन्तु तत्कालीन लोक के बीच वह कितना ग्राह्य था, इसकी जाँच-पड़ताल की ओर उन्होंने विशेष ध्यान नहीं दिया है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ही एकमात्र ऐसे इतिहासकार हैं जिन्होंने साहित्य के पाठक या श्रोता को केन्द्र में रखा है। पाठक या श्रोता तो मेरा शब्द है—बख्शीजी पूछते हैं कि काल विशेष के कवि किसको सम्बोधित कर रहे थे और उन सम्बोधितों पर उसकी क्या प्रतिक्रिया हो रही थी? उनका मानना है कि हम जिसे वीरगाथा काल या भक्तिकाल कहते हैं, वह सारा का सारा लोक को सम्बोधित है। वे चाहे रासो ग्रन्थ हो, चाहे अमीर खुसरो की मुकरियाँ, चाहे विद्यापति के पद—सब जनता को सम्बोधित हैं और जनता उनसे बहुत दूर और बहुत गहरे तक प्रतिकृत होती है। जगनिक का आल्हा खण्ड तो लोक काव्य है ही। तुलसी और सूर, कबीर या जायसी ने हिन्दी भाषी जनता के बीच जितनी और जैसी पैठ बनाई, उतनी और वैसी कोई दूसरा कवि नहीं बना सका। सच पूछा जाये तो हिन्दी साहित्य के समूचे इतिहास में यही कवि हैं जो लोकप्रिय कहे जा सकते हैं, ये साहित्य के मानदण्डों की भी रक्षा करते हैं और लोकप्रियता की भी। इस काल के कवि सामान्य जीवन प्रसंगों के बीच जितने उद्धृत किये जाते हैं, किसी अन्य काल के नहीं। बख्शीजी ने केशव से प्रारम्भ होने वाले काव्य को रसिकों का काव्य कहा है—बिहारी या मतिराम, पद्माकर या देव उन्हीं के बीच, लोकप्रिय थे जो शास्त्रों के ज्ञाता थे और काव्यरसिक थे। अंग्रेजों के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप दरबार उजड़े, अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार हुआ, मुद्रणालय आये। रसिकता का स्थान अब बौद्धिकता ने ले लिया। साहित्य अब सुनने की नहीं, पढ़ने की चीज हो गया। पहले गद्य भी कवितानुमा अच्छा माना जाता था अब कविता अधिकाधिक गद्यात्मक हुई। बख्शीजी आधुनिक हिन्दी साहित्य को शिक्षितों का साहित्य कहते हैं। यह सच है कि प्रेमचंद घीसू और माधव, होरी और धनिया के जीवन संघर्षों की गाथा लिख रहे थे पर मैं नहीं समझता कि उनका लिखा हुआ किसी घीसू या माधव, होरी और धनिया ने पढ़ा होगा। विल्लेसुर बकरिहा या कुल्लीभाट पर लिखना अलग बात है पर इस लिखे हुए को उन जैसों द्वारा पढ़ा जाने या उनके बीच लोकप्रिय होना बिल्कुल अलग बात। प्रेमचंद हों या शरच्चन्द्र, लोकप्रिय उतने नहीं, जितने पाठकप्रिय हैं। साहित्य लोग पढ़ते हैं, शिक्षित लोग। लोक एक प्रमूर्त्त इकाई है, लोग एक सुनिश्चित एवं सुनिर्धारित।

साहित्य की लोकप्रियता की जब बात की जाती है तो बात करने वालों का आशय ऐसे साहित्य से होता है जो लोक के बीच प्रिय हो। लोक के बीच प्रिय तो सिनेमा की गीत हैं या 'शोले' के संवाद। कुशवाहा कांत, कर्नल रंजीत या प्यारेलाल 'आवारा' का लुगदी साहित्य भी काफी लोकप्रिय है। यात्रा करने वालों के बीच समय काटने के लिए इस लुगदी साहित्य की अच्छी खासी माँग है। गुरुदत्त का साहित्य भी इसी लुगदी साहित्य का परिष्कृत रूप है पर सिनेमा के गीत या संवाद, कुशवाहाकांत या गुरुदत्त साहित्यकारों के आदर्श नहीं हो सकते।

तो हमारा आदर्श क्या हो?

वास्तव में हिन्दी क्षेत्र के सन्दर्भ में जहाँ शिक्षितों का अनुपात बहुत कम है और जहाँ मुद्रित साहित्य के पढ़नेवालों की संख्या और भी कम है, साहित्य की लोकप्रियता की बात नहीं की जानी चाहिए। बात की जानी चाहिए **पाठकप्रियता** की। वह कौन-सा साहित्य है जो स्तरीयता की रक्षा भी करता हो और पाठकों के बीच भी स्वीकार्य हो। मैं ऐसे साहित्य को '**पाठक-फ्रेंडली**' साहित्य कहता हूँ। पाठकप्रिय। वास्तव में हिन्दी का सामान्य लेखक अपने ज्ञान, अपने पाण्डित्य, अपने साहित्यिक आभिजात्य का रौब गालिब करने के लिए जितना व्यग्र दिखता है, उतना पाठक तक सम्प्रेषणीय होने के लिए नहीं। 'कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू' का सुभाषित अनजाने उसकी चेतना को आच्छन्न किये रहता है। छायावादी काव्य ने तो दुर्बोधता और कुलीनता को साहित्य के एक मूल्य के रूप में ही प्रतिष्ठित कर दिया। यदि 'कामायनी' और 'राम की शक्तिपूजा' विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम से निकाल दी जायें तो उन्हें पढ़ने वाले कितने मिलेंगे? 'निराला' हमारे बहुत बड़े कवि हैं पर उनके एक गीत—'वर दे वीणावादिनि! वर दे' को छोड़कर शायद ही कोई छायावादी गीत हिन्दी जनता द्वारा गाया जाता हो। बंगाल में रवीन्द्रनाथ के गीतों की पहुँच सामान्य जन तक है। प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी के सर्वाधिक पाठकप्रिय साहित्यकार हैं पर हमारे शीर्ष आलोचकों ने प्रेमचंद साहित्य को तात्कालिक घोषित किया था और उन्हीं दिनों लिखे जा रहे छायावादी साहित्य की तुलना में हीनतर माना था। परसाई को भी बहुत दिनों तक

हमारे सुधी समीक्षकों ने कोई भाव नहीं दिया। प्रेमचंद और परसाई दोनों पाठकों की खोज है। बच्चन भी कम लोकप्रिय नहीं हैं—उनकी 'मधुशाला' आज भी सैकड़ों लोगों को कण्ठस्थ है पर बच्चन के बारे में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जैसे कृती समीक्षक की राय बहुत अच्छी नहीं है, खासकर उनकी लोकप्रियता को वे 'बेकार और आवारा लोगों' से जोड़ते हैं। तो स्थिति यह है कि आधुनिक हिन्दी का जो साहित्य लोकप्रिय है, वह स्तरीय नहीं माना जाता और जो स्तरीय माना जाता है वह कक्षाओं या ग्रन्थालयों के बाहर नहीं निकल पाता। इस विषमस्थिति का कारण सम्भवत: समीक्षकों द्वारा परम्पराओं की रक्षा का आग्रह, नैतिक शुचिता से लगाव, बोलचाल की भाषा के प्रति अवज्ञा का भाव, शायद साहित्य की कुलीनता का दंभ। सामान्य पाठक की समझ और संवेदना के प्रति अव्यक्त अविश्वास भी शायद एक कारण हो।

मैंने जब संस्मरण लिखने शुरू किये और उनके 'हंस', 'वागर्थ', 'वसुधा', 'पहल', 'नया ज्ञानोदय' जैसी पत्रिकाओं में छपते ही सारे हिन्दी क्षेत्र से पाठकों के जैसे और जितने पत्र मिले, उससे साहित्य की लोकप्रियता के सम्बन्ध में मुझे नये सिरे से सोचने पर बाध्य होना पड़ा। इन पाठकों में छात्र भी थे, गृहणियाँ भी, बैंक के कर्मचारी भी थे और गद्दी पर बैठने वाले दुकानदार भी, अध्यापक और साहित्यकार भी कम नहीं थे। मुझे यह जानने की उत्सुकता हुई कि आखिर वह कौन-सी बात है जो रजनीश या 'सुमन' या दुष्यंत के मेरे संस्मरणों को इतना पाठकप्रिय बनाती है? पहिली बात तो मुझे यह लगी कि एक लेखक के रूप में मैं न तो किसी का धोबी हूँ, न किसी का काँवड़िया। संस्मृत को मैंने न तो देवता माना, न ही अधम या पातकी। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अच्छी चीजें होती हैं तो कुछ बुरी भी। ये सब नितांत वैयक्तिक उपार्जन नहीं होते। हमारी मूल्यचर्या, हमारे समाज के पाखण्ड, हमारी आकांक्षाएँ, चाटुकारिता की हमारी प्रवृत्ति, 'सब चलता है' का हमारा मनोभाव, 'क्या फरक पड़ता है' की हमारी वृत्ति को उजागर करने में मैंने कोई संकोच नहीं किया। किसी का कद छोटा करने के उद्देश्य से नहीं, अपने समय और समाज को ठीक-ठीक समझने के भाव से। कुछ 'होलियर रैन दाऊ' किस्म के लोगों ने यह तो कहा कि श्रद्धेयों और पूज्यों के सम्बन्ध में यह सब नहीं लिखना चाहिए पर किसी ने यह नहीं कहा कि आपने जो लिखा है, गलत है।

किसी ने यदि तथ्यगत कोई गलती बताई तो मैंने पुस्तकाकार छपने पर उन्हें ठीक कर दिया। साथ ही मैंने संप्रेषणीयता का पूरा ध्यान रखा। अवसर आया तो मैंने फिल्मी गीतों से भी सहायता ली, विज्ञापन के जुमलों से भी। कुछ नये शब्द भी गढ़े, लोक व्यवहार के शब्दों को भी छाती से लगाया। पाठकों को लगा कि संस्मरण लेखक उन्हीं में से एक हैं, जैसा वे सोचते-बोलते हैं, ठीक वैसा ही यह भी करता है। हिन्दी का पाठक समझदार है, संवेदनशील है, साहित्य का प्रेमी है, यह अनुभूति उसे भी अपने लेखक से जुड़ने की ललक से भरती है। साहित्य सदि समाज के आगे चलनेवाली मशाल है और साहित्यकार यदि मशाल बरदार है तो उसे पाठकों के चेहरे भी दिखने चाहिए और पाठकों को भी उस मशाल बरदार के चेहरे जानने का मौका मिलना चाहिए। पठनीयता साहित्य का कोई मूल्य हो चाहे न हो पर किसी भी लेखक के लिए तो निश्चित ही वह महत्त्वपूर्ण होना ही चाहिए। यदि लेखक पाठकों तक नहीं पहुँच पाता तो वह लिखता ही क्यों है? मैं तो अपने पाठकों के लिए लिखता हूँ क्योंकि मैं उन्हें समझदार, संवेदनशील और प्रबुद्ध मानता हूँ। मैं उन पर विश्वास करता हूँ क्योंकि वे भी मुझ पर विश्वास करते हैं। अपने पाठकों से मेरा व्यवहार एक मित्र जैसा है, मैं चाहता हूँ कि वे भी मुझे अपना मित्र समझें। हमारे साहित्यशास्त्रियों ने 'कान्ता सम्मत उपदेश' की बात की है, अब हमें 'पाठक सम्मत उपदेश' की बात करनी चाहिए।

स्मृति शेष

वरिष्ठ पत्रकार जोगलेकरजी का निधन

प्रखर पत्रकार **काशीनाथ जोगलेकर** का शनिवार, 24 फरवरी 2007 की शाम गुड़गाँव हरियाणा स्थित निवास पर निधन हो गया। वे 83 वर्ष के थे। काशी उनकी जन्मभूमि थी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। अमृत बाजार पत्रिका के स्थानीय प्रभारी थे। बाद में आकाशवाणी में जम्मू कश्मीर के प्रभारी और बेरूत में संवाददाता भी नियुक्त रहे।

आकाशवाणी के समाचार सेवा के निदेशक के रूप में कार्य किया और रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स ऑफ इण्डिया के रूप में कार्य करने के बाद अवकाश ग्रहण किया। उसके बाद भी वे बराबर समाचार पत्रों में स्तम्भकार के रूप में सक्रिय रहे और कई पुस्तकें भी लिखी। जिनमें से कुछ पुस्तकों पर उनको भारत सरकार ने पुरस्कृत भी किया था। अभी दो माह पूर्व उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट लग गयी थी, किन्तु कल शाम अचानक उनको तीसरी बार हृदयाघात हुआ और चिकित्सा मिलने के पूर्व ही निधन हो गया। आज दोपहर एक बजे लोदी रोड दिल्ली स्थित विद्युत शवदाह गृह में दाह संस्कार हुआ।

विश्वविद्यालय प्रकाशन से जोगलेकरजी की 'समाचार और संवाददाता' पुस्तक प्रकाशित हुई जो अत्यन्त लोकप्रिय रही। जोगलेकरजी ने पत्रकारिता जीवन के संस्मरण **बहुत देखा बहुत सुना** लिखे हैं, वह प्रकाशन के क्रम में है।

शरणार्थी नहीं, पुरुषार्थी

अगस्त 1947 में पाकिस्तान बनने और देश का बँटवारा होने पर जिस तरह लाखों लोग अपना घर-बार छोड़कर विस्थापित हुए और जिस तरह का लोमहर्षक हत्याकाण्ड हुआ, वैसा मानवीय इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। मुझे और मेरे परिवार को भी लाहौर, जहाँ हम सुख, समृद्धि और प्रतिष्ठा से रह रहे थे, को सदा के लिए अलविदा कहकर दिल्ली में नए सिरे से पाँव जमाने पड़े।

जीवन में उतार-चढ़ाव होते ही हैं, प्राकृतिक विपदाएँ, भूचाल, सुनामी आदि तो आते ही हैं, परन्तु कभी-कभी ऐसे भूचाल भी आते हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। 1947 का दुर्भाग्यपूर्ण बँटवारा ऐसा ही एक भूचाल था।

देश के विभाजन के समय मेरी आयु 27 वर्ष की थी। मेरी सारी शिक्षा-दीक्षा, बचपन-यौवन, लाहौर में ही बीता था। मैं ऐसा मानता हूँ कि मेरा दूसरा जन्म 1947 में हुआ था, क्योंकि तब न रहने के लिए घर था, न व्यवसाय के लिए कोई दुकान। इस कठिन संघर्ष की बात को विस्तार न देकर मात्र एक उर्दू का लोकप्रिय शेर कहना चाहूँगा—

दर्द का हद से गुज़रना है, दवा हो जाना

ऐसा ही कुछ हुआ। एक ओर अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ से तथा दूसरी ओर ईश्वर की कृपा से और अनापेक्षित हितचिन्तकों के सहयोग से नए सिरे से पारिवारिक पुस्तक-व्यवसाय को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने में सफलता मिली। उन दिनों विस्थापितों के लिए 'शरणार्थी' शब्द का प्रयोग होता था। इस शब्द से मुझे चिड़ थी। उन्हीं दिनों फिर एक दूसरा शब्द 'पुरुषार्थी' प्रयोग में आने लगा। जीवन में उन्नयन के लिए प्रारब्ध से कहीं अधिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। कई बार सोचता हूँ कि यदि देश के बँटवारे के समय मेरी आयु 27 वर्ष के स्थान पर 57 वर्ष होती तो इस विकट परिस्थिति का सामना कितना कठिन होता। लेकिन जीवन का दूसरा नाम ही संघर्ष है।

जीवन में कई बार अप्रत्याशित घटनाएँ हो जाती हैं। इसी प्रसंग में एक 'घटना' का विवरण देना चाहूँगा। मैंने अपनी आयु के 82 वर्ष तक कभी कोई कविता नहीं लिखी थी, न ही लिखने का विचार आया, न ही प्रेरणा। एकाएक पहले अंग्रेजी में और तदनंतर हिन्दी में कविताएँ लिखने लगा। अधिक ठीक होगा यह कहना कि कविताएँ एक निर्झर के समान बह निकलीं।

जीवन में रुकावटें आती ही हैं परन्तु साथ ही उन्नयन के अनेक द्वार भी खुल जाते हैं।

—विश्वनाथ

अधिष्ठाता, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

यत्र-तत्र-सर्वत्र

राष्ट्रपति कलाम खुशवंत सिंह के घर

राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने शुक्रवार, 9 फरवरी 2007 को प्रख्यात लेखक खुशवंत सिंह से उनके आवास पर जाकर मुलाकात की। राष्ट्रपति को देखकर श्री सिंह को सहसा इस बात का भरोसा ही नहीं हुआ कि देश के राज्याध्यक्ष एक कलमघिस्सू के पास अपना वक्त बरबाद करने आये हैं।

शाम जिस समय श्री कलाम दिल्ली के मध्य में स्थित खुशवंत सिंह के अपार्टमेंट पर पहुँचे तो 93 वर्षीय लेखक एवं स्तम्भकार उन्हें देखकर रोमांचित हो उठे। राष्ट्रपति उनके पास करीब आधा घण्टे तक रुके। इस दौरान अलाव के पास बैठ कर उन्होंने अपनी साझा दिलचस्पी के विषय पुस्तकों पर बात की।

पुस्तकों के आदान-प्रदान के दौरान डॉ० कलाम ने उन्हें अपनी लिखी हुई पुस्तक 'इग्नाइटेड माइंड' और 'विंग्स ऑफ फायर' दी, जबकि श्री सिंह ने उन्हें अपनी कुछ पुस्तकें भेंट कीं। श्री सिंह ने कहा कि, उन्हें जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि, डॉ० कलाम ने उनकी पुस्तकें पहले से ही पढ़ रखी थीं। उन्होंने 'हिस्ट्री ऑफ सिख्स' के दो भाग पढ़ लिये थे। पहले मैं सोचता था कि, इग्नाइटेड माइंड को फाड़ कर फेंक दूँगा, लेकिन जब मैंने उसे पढ़ा तो मेरी धारणा ही एकदम से बदल गयी। वह बहुत अच्छे लेखक हैं और सहज बुद्धि की बात करते हैं। श्री सिंह ने स्वीकार किया डॉ० कलाम से मिलने के बाद वह उनके प्रशंसक बन गये हैं। वैसे वह इस बात को लेकर चिंतित भी हैं कि अब उनके पड़ोसी उनके बारे में क्या सोचते होंगे?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल शोध संस्थान

हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की स्मृति में स्थापित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल शोध संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का अंग बन जायगा। विश्वविद्यालय तथा संस्थान के बीच शीघ्र ही अनुबन्ध पर हस्ताक्षर होगा। वाराणसी में रविन्द्रपुरी में आचार्य शुक्ल ने अपना निवास बनाया था, उस समय यह स्थान निर्जन और वृक्षों से परिपूरित था। आचार्य की स्मृति में स्थापित शोध-संस्थान में दो बड़े हाल, आठ कमरे तथा समृद्ध पुस्तकालय हैं। आचार्य शुक्ल ने जीवनपर्यन्त विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन को अग्रसर किया और अब यह संस्थान एक इतिहास स्थापित करेगा। आशा है विश्वविद्यालय विशेषकर हिन्दी विभाग इस संस्थान को हिन्दी भाषा तथा साहित्य का मानक संस्थान बनायेगा जहाँ शोधार्थी नये तथा महत्त्वपूर्ण विषयों पर ग्रन्थों की रचना और प्रकाशन में अपना योगदान करेंगे।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी चेयर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० पंजाब सिंह ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर घोषणा की है कि विश्वविद्यालय में शीघ्र ही आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी चेयर स्थापित की जायगी।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक योगदान

प्रथम श्रेणी का साहित्य कभी बासी नहीं होता। वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, कालिदास की रचनाएँ व आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास भी प्रथम श्रेणी के साहित्य में शामिल हैं। जहाँ तक आचार्य द्विवेदी की बात है तो उन्होंने शास्त्रवाद की अवधारणा को निरस्त किया और शास्त्रीयता के साथ आधुनिकता को जोड़ते हुए नयी धार की बात की। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' और इलियट की अवधारणा 'परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा' से द्विवेदी के सिद्धान्त मेल खाते हैं।

परम्पराओं को अर्जित करने के साथ ही इसे अपने तरीके से निर्मित भी किया जाता है। द्विवेदीजी प्राय: यही कहा करते थे कि जो असाध्य है उसे साध्य करें। उन्होंने रुढ़ि का निर्वाह करते हुए धार्मिक रुढ़िवादिता का प्रतिकार किया। द्विवेदीजी ने 'शब्दों' की मूल आत्मा को परखा और समझा। **—डॉ० नामवर सिंह**

तसलीमा नसरीन

भारत सरकार द्वारा बांग्लादेश की निर्वासित लेखिका तसलीमा नसरीन की वीजा अवधि छह महीने के लिए बढ़ा दिए जाने के बावजूद बुद्धिजीवियों और सामाजिक संगठन के कार्यकर्ताओं ने उन्हें भारत में शरण दिए जाने की माँग की है। लेखक खुशवंत सिंह और अरुंधती राय, अवकाशप्राप्त न्यायाधीश लीला सेठ, पत्रकार कुलदीप नैय्यर और सईद नकवी, पटकथा लेखक विजय तेंदुलकर, समाज सेवक अरुणा राय और फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल और गिरीश नकवी ने तसलीमा नसरीन को भारत में शरण दिए जाने की माँग की है। इन लोगों का कहना है कि अगर तसलीमा को भारत में शरण नहीं दी जाती है तो यह हमारे लिए शर्म की बात होगी।

लाइब्रेरी पर सरकारी संकट

सरकार एक ओर तो इस बात से चिंतित रहती है कि अब किताबों के पाठक लगातार कम हो रहे हैं दूसरी ओर सरकारी नीतियाँ ऐसी हैं कि किताबों के पाठकों की उपेक्षा की जा रही है। केन्द्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय के शास्त्री भवन पीआईबी की यह लाइब्रेरी कई दशकों से है। यह लाइब्रेरी मुख्यत: पत्रकारों के लिए है। इसमें किताबों के अलावा कई तरह की पत्र-पत्रिकाएँ भी आती हैं, जिनका लाभ पत्रकारों के अलावा स्वयं पीआईबी के अफसरों-कर्मचारियों को भी मिलता है। लेकिन अब इस लाइब्रेरी पर गहरा संकट आ गया है। मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी चाहते हैं कि इस लाइब्रेरी को सीजीओ कॉम्प्लेक्स लोदी रोड भेज दिया जाए। लाइब्रेरी के वहाँ जाते ही यह पत्रकारों के लिए दुर्लभ हो जाएगी।

हैरी पॉटर की अन्तिम किताब

हैरी पॉटर के दीवानों के लिए इस साल जुलाई का महीना मिलीजुली सौगात लेकर आएगा। खुशी की बात यह है कि हैरी पॉटर सिरीज की सातवीं किताब 'हैरी पॉटर एण्ड द डेथली हेलोस' इसी वर्ष 21 जुलाई को उपलब्ध होगी। हैरी को पसन्द करनेवाले बच्चों को अफसोस इस बात का रहेगा कि यह उनके हीरो की आखिरी किताब होगी।

साहित्यकारों का जन्मशताब्दी वर्ष

(1) **पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र** का जन्म 1906 ई० में हुआ, इनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व का स्मरण किया जाना चाहिए। सम्पादन, आलोचना, अन्वेषण के अतिरिक्त अनेक दुरूह ग्रन्थों की आपने प्रामाणिक टीकाएँ लिखीं। मिश्रजी मध्ययुगीन हिन्दी काव्य के मर्मज्ञ, रीतिकालीन स्वच्छन्द कविता के विशेषज्ञ एवं काव्यशास्त्र के पण्डित थे।

(2) **पं० सीताराम चतुर्वेदी :** जन्म 27 जनवरी 1907 अभिनव भरत चतुर्वेदीजी काशी की विभूति थे जिन्होंने जयशङ्कर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' में अभिनय किया था।

(3) **परिपूर्णानन्द वर्मा :** जन्म 7 फरवरी 1907

(4) **महादेवी वर्मा :** जन्म 24 मार्च 1907। छायावादी कवियों की बृहच्चतुष्टयी में प्रमुख थीं। महादेवी ने नारी वेदना को अपनी विभिन्न रचनाओं में व्यक्त कर चेतना का सृजन किया।

(5) **हजारीप्रसाद द्विवेदी :** जन्म 19 अगस्त 1907

(6) **हरिवंशराय बच्चन :** जन्म 27 नवम्बर 1907

सीताराम चतुर्वेदी जन्म शताब्दी

अभिनव भरत आचार्य पण्डित सीताराम चतुर्वेदी का जन्म शताब्दी समारोह शनिवार, 27

जनवरी 2007 को वाराणसी के छोटी पियरी स्थित वेद भवन में वसन्त पूजन के साथ शुरू हुआ। साहित्यकारों ने उन्हें साहित्य व नाट्य जगत का पुरोधा बताया।

मुख्य अतिथि गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० आर०के० मिश्र ने कहा कि आचार्यजी ने सिद्ध कर दिया कि ज्ञान अविभाज्य है। डॉ० आशुतोष उपाध्याय ने पण्डित चतुर्वेदी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। डॉ० कुँवर बहादुर श्रीवास्तव ने आचार्यजी के प्रशासनिक क्षमताओं की चर्चा की। डॉ० जितेन्द्रप्रसाद मिश्र ने साहित्य व नाट्य क्षेत्र में आचार्य चतुर्वेदीजी के अवदानों की व्याख्या की। विधायक श्यामदेवराय चौधरी ने कहा कि आचार्यजी के बारे में कुछ भी कहना आसमान को छूने जैसा है। डॉ० चितरंजन ज्योतिषी ने कहा कि संगीत के बिना वाणी में ओज व भाव सम्भव नहीं है। समारोह की अध्यक्षता श्रीधर शास्त्री ने, संचालन पण्डित धर्मशील चतुर्वेदी ने तथा धन्यवाद प्रकाश डॉ० छविनाथ पाण्डेय ने किया। समारोह को प्रो० गिरीशचन्द्र चौधरी, कवि श्रीकृष्ण तिवारी, हनुमानप्रसाद शर्मा, आचार्य शिवजी उपाध्याय, प्रो० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी ने भी सम्बोधित किया।

बाबू गुलाबराय जयन्ती समारोह

बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान के तत्वावधान में हिन्दी के सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं निबन्धकार बाबू गुलाबराय का 119वाँ जयन्ती समारोह 22 जनवरी 2007 को नागरी प्रचारिणी सभा आगरा में मनाया गया। वरिष्ठ गीतकार जगतप्रकाश चतुर्वेदी ने समारोह की अध्यक्षता की। विशिष्ट अतिथि प्रो० रामवीर सिंह ने कहा कि बाबूजी के लेखन में अध्यापकीय दृष्टि थी वे गुणों की बात करते थे। मुख्य अतिथि आगरा की महापौर अंजुला सिंह माहौर ने सूचित किया कि शीघ्र ही आगरा में नगर निगम बाबूजी की प्रतिमा लगाएगी।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष सोम ठाकुर एवं हिन्दीसेवी डॉ० कमलेश नागर को 'बाबू गुलाबराय सम्मान' प्रदान किया गया। सोम ठाकुर ने इस अवसर पर कहा कि बाबूजी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दर्शन और तर्कशास्त्र को साहित्य में ढाला। उनके लेखन में अन्धी भावुकता नहीं थी। उनके निष्कर्ष सर्वग्राह्य थे। सोम ठाकुर एवं महापौर ने विनोदशंकर गुप्त द्वारा सम्पादित बाबू गुलाबराय के निबन्धों की पुस्तक 'मेरे मानसिक उपादान' का विमोचन किया। कार्यक्रम का आरम्भ डॉ० शशि तिवारी द्वारा सरस्वती वन्दना से हुआ। अन्त में बाबू गुलाबराय के पुत्र विनोदशंकर गुप्त ने धन्यवाद ज्ञापन दिया तथा सूचित किया कि बाबूजी के निबन्ध संग्रह इण्टरनेट पर वेबसाइट WWW.babugulabrai.in पर देखे जा सकते हैं।

1.8 मिलियन लिपियों के लिए ऑनलाइन डाटाबेस

भारत सरकार ने एक डाटाबेस बनाया है, जिसमें हजारों पुरानी लिपियों को सम्मिलित किया गया है। इस डाटाबेस में उस समय के विज्ञान, फिलॉसफी, इतिहास, आर्ट आदि को भी सहेज कर रखा जा रहा है। इसमें 1.8 मिलियन पुरातन भाषाओं या लिपियों को रखा गया है। सरकार इन्हें देश धरोहर के रूप में अग्रसारित कर रही है। 5 मिलियन लिपियों में से 1.8 को लिपिबद्ध किया जा चुका है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री अम्बिका सोनी ने नमामी डॉट ओआरजी के रूप में इसे लांच किया। इसके अलावा लिपियों की राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक कैटलॉग, जिसका नाम कीर्तीसम्पदा है, देश अलग-अलग लिपियों के बारे में जानकारी देगी। इस ऑनलाइन कैटलॉग को हिन्दी और अंग्रेजी में पढ़ा जा सकता है। इसके अलावा लेखक, लिपि, भाषा और विषय के आधार पर ढूँढा जा सकता है।

अमृतलाल नागर युवा कथा सम्मान

35 वर्ष तक की आयु के कथाकार के लिए 5000 रुपये का अमृतलाल नागर युवा कथा सम्मान 'शब्द शिखर' पत्रिका के मंच से प्रारम्भ किया गया है। कहानी (तीन प्रतियों में) भेजने की अन्तिम तिथि 31 जुलाई 2007 है। पता—आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, सम्पादक 'शब्द शिखर' 'कथायन', पटेल का बगीचा, यादव कालोनी, सागर-470 001

पाठकों से

विश्वविद्यालय प्रकाशन पाठकों से यह जानना चाहता है कि उनकी रुचि किस विषय की पुस्तकों में है, ताकि उन्हें समय-समय पर नवीनतम पुस्तकों से परिचित कराया जा सके। पाठकों के ई-मेल की जानारकी होने पर उन्हें ई-मेल से भी अवगत कराया जा सकेगा।

'भारतीय वाङ्मय' विगत सात वर्ष से प्रकाशित हो रहा है। प्रतिमास हजारों पाठकों को नि:शुल्क सुलभ कराया जाता रहा है। किन्तु अब यह सम्भव नहीं हो पा रहा है। यह जानना अपेक्षित है कि पाठक इसकी आवश्यकता महसूस करते हैं या नहीं। आगे से नि:शुल्क भेजना सम्भव नहीं होगा। नमूने के अंक के लिए पाँच रुपये भेजें।

यदि आवश्यकता महसूस हो तो ग्राहक बनें। कम्प्यूटर में विषयवार, रुचिवार पते संगृहीत किये जायेंगे।

कृपया सम्पर्क करें—

प्रकाशन अधिकारी
विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी-221001

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' देश की साहित्यिक गतिविधियों का एक श्रेष्ठ निर्भीक एवं शफ्फाक आईना है जो गागर में सागर की तरह प्रति माह भरपूर जानकारी प्रदान करता है। यह पत्रिका साहित्यप्रेमियों के लिए एक आवश्यकता-सी बन गई है और वे उत्सुकता से इसकी प्रतीक्षा करते हैं। आपके द्वारा लिखे सम्पादकीय नये विचार-बिन्दुओं को रेखांकित करते हैं और विचार-उन्मीलक होने के साथ-साथ विचार-प्रेरक भी होते हैं। **—डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा,** जयपुर

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर 2006 अंक का सम्पादकीय हिन्दीसेवी संस्थाओं की दशा-दिशा की गहरी पड़ताल करता है। वस्तुत: हिन्दीभाषी क्षेत्र में ही हिन्दी की सबसे दयनीय स्थिति है। हिन्दीभाषी समाज में न अपनी भाषा के प्रति गौरव-बोध है, न ही भाषा को विकसित करने की चाह। अधिकांश हिन्दी सेवा संस्थाएँ भी अब मुद्रा उगाही कार्यक्रम को अमलीजामा पहनाने में ही व्यस्त रहती हैं।

लघु कलेवर के बावजूद पत्रिका देश की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जगत का दर्पण बन चुकी हैं। **—डॉ० वीरेन्द्रकुमार सिंह,**
उपनिदेशक राजभाषा, जल संसाधन मंत्रालय
फरीदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' समस्त अर्थों में एक पूर्णरूपेण पत्रिका है, जिसमें एक साथ साहित्यिक विचार, आलेखन, काव्य प्रलेखन तथा समीक्षात्मक पाठ्य सामग्री, गतिविधियाँ, कार्यक्रमों आदि की जानकारी एक प्रखर मानकता के साथ प्राप्त होती है। 'भारतीय वाङ्मय' सही दिशा में विचार चिन्तन की तत्समय आवश्यक चिन्तन मनन की पठन-पाठन की एक सुविकसित परम्परा ढाल रहा है जो कि सहजत: स्वागतेय, श्रेयस्कर व अनुगमनीय है।

—कृष्णकुमार द्विवेदी
राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

अधिकार लोलुप

स्कंदगुप्त—अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्त्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं?

स्कंदगुप्त : **जयशङ्कर 'प्रसाद'**

सम्मान-पुरस्कार

साहित्य अकादमी पुरस्कार

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की आत्मकथा को राजस्थानी भाषा में अनुदित करने के लिए **आईदान सिंह भाटी** को वर्ष 2006 का साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार दिया जाएगा। जबकि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की अंग्रेजी में प्रकाशित जीवनी को मणिपुरी में अनुदित करने के लिए **वीएस राजकुमार** को पुरस्कृत किया।

तुलसीदास की कृति 'श्रीरामचरितमानस' के कोंकणी में अनुवाद के लिए के **अनंत भट** तथा पूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की जीवनी के कश्मीरी में अनुवाद के लिए **निशांत अंसारी** को मरणोपरान्त यह पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार में 20 हजार रुपये का चेक तथा ताम्रफलक प्रदान किया जाएगा। ये पुरस्कार इस वर्ष अगस्त में पुरस्कृत लेखकों को दिए जायेंगे। हिन्दी और संस्कृत के लिए अनुवाद पुरस्कार की घोषणा बाद में की जाएगी। डोगरी, संताली और सिन्धी में इस वर्ष पुरस्कार नहीं दिए जायेंगे। 'मेघदूत' का नेपाली में अनुवाद के लिए **के०वी० नेपाली**, 'कथासरितसागर' के ओडिया अनुवाद के लिए सुदर्शन आचार्य, कैजी आजमी की शायरी के बंगला अनुवाद के लिए **ज्योतिभूषण चाकी** एवं रमेशचंद्र शाह के उपन्यास 'विस्सा गुलाम' के असमिया अनुवाद के लिए **हेमेश्वर दिहिंगरिया** को अनुवाद पुरस्कार दिया जाएगा। इन पुरस्कारों की घोषणा तथा अकादमी की प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ ही साहित्योत्सव 2007 का शुभारम्भ हो गया।

मंगलवार, 27 फरवरी 2007 को हिन्दी के प्रसिद्ध कवि ज्ञानेन्द्रपति समेत 24 लेखकों को अकादमी पुरस्कार दिया गया।

साहित्यकारों को पद्म पुरस्कार

गणतंत्र दिवस पर देश तथा विदेश के विभिन्न साहित्यकारों तथा शिक्षाविदों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गई—

पद्म विभूषण : खुशवंत सिंह, राजाराव (मरणोपरांत) अमेरिका।

पद्मभूषण : गोपालदास 'नीरज' (उ०प्र०), प्रो० भिक्षु पारेख (यू०के०), चन्द्रप्रकाश सैकिया मरणोपरांत (असम), फादर गैब्रिल (केरल), जावेद जननिशार अखतर (महाराष्ट्र), जेफ्री डी० सच्स (अमेरिका), कैप्टेन एल० जेड० शैलो (मिजोरम), टी०एन० श्रीनिवासन (अमेरिका), प्रो० तपन चौधरी (यू०के०)।

पद्मश्री : डॉ० आद्याप्रसाद (उ०प्र०), अमिताभ घोष (अमेरिका), डॉ० बकुल हरशदराय ढोलकिया (गुजराती), **गिरिराज किशोर** (उ०प्र०), **डॉ० महादेवप्रसाद पाण्डे** (छत्तीसगढ़), सुश्री मीनाक्षी गोपीनाथ (दिल्ली), सुश्री मिरियम लवोना सलगनिक (रूस), मुजतबा हुसेन (आन्ध्र), प्रो० मुशिरुल हसन (दिल्ली), प्रतिभा राय (उड़ीसा), रविन्द्रदयाल (दिल्ली), प्रो० रोस्तिस्लाव, बोरिसोविच (रूस), शेखर पाठक (उत्तराखण्ड), डॉ० सुकुमार अछिकोडे (केरल), टी०एस० रंगराजन 'कवि गरवाली' (तमिलनाडु), श्रीमती तमसुला आओ (असम), **विजयदान देथा** (राजस्थान), विक्रम सेठ (यूके), डॉ० यूसुफरवान मोहम्मद खान पठान (महाराष्ट्र)।

डॉ० रामदरश मिश्र को भारत भारती सम्मान

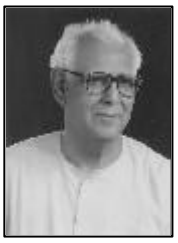

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सर्वोच्च सम्मान भारत भारती सम्मान (वर्ष 2005) गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या गुरुवार, 25 जनवरी 2007 संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष सोम ठाकुर ने विशिष्ट अतिथि कन्हैयालाल नंदन की उपस्थिति में अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, सम्मान पत्र तथा दो लाख इक्यावन हजार रुपये सम्मान स्वरूप प्रदान किये। सम्मानित डॉ० मिश्र ने कहा—उनका सम्मान उनके गाँव का सम्मान है।

इस अवसर पर कार्यकारी उपाध्यक्ष **सोम ठाकुर** ने कहा—'धर्मयुग' जैसी पत्रिका निकालने और देश में साहित्यपीठों की स्थापना करने की योजना आर्थिक कारणों से आरम्भ नहीं हो पा रही है।

दो-दो लाख रुपये की सम्मान राशि वाले लोहिया साहित्य सम्मान से **कृष्णदत्त पालीवाल** को, महात्मा गाँधी सम्मान से **कामतानाथ** को, हिन्दी गौरव से **गोपाल चतुर्वेदी** को, दीनदयाल उपाध्याय सम्मान से **अर्जुनदास केसरी** को तथा अवन्तीबाई सम्मान से **बलवीर सिंह करुण** को सम्मानित किया गया। राशि के ड्राफ्ट के अतिरिक्त सम्मानित रचनाकारों को प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न एवं शाल भेंट किये गये।

संस्थान ने मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुपालन में अपने 25 हजार एवं इससे अधिक किन्तु एक लाख रुपये से कम के सभी सम्मानों की धनराशि बढ़ाकर एक लाख रुपये कर दी थी। समारोह में रचनाकारों को बढ़ी हुई धनराशि के ड्राफ्ट दिए गए। मधुलिमये पुरस्कार से डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम' को सम्मानित किया गया जबकि साहित्यभूषण सम्मान रवीन्द्र कालिया, नईम, प्रभाकर श्रोत्रिय, भास्करानन्द लोहानी, कुसुम अंसल, छविनाथ मिश्र, अमरनाथ शुक्ल, हृदयनारायण मेहरोत्रा, अमृता भारती, कुमार रवीन्द्र, सत्यप्रकाश मिश्र एवं धनंजय सिंह को दिए गए।

गैर हिन्दी भाषी रचनाकारों को दिया जाने वाला सौहार्द सम्मान आबिद सुरती, विश्वनाथ सचदेव, के० विक्रम राव, भगवान अटलानी, विमला कुमारी मुंशी को दिया गया। लोकभूषण से मोहनस्वरूप भाटिया को, कला भूषण से देवेन्द्रराज अंकुर को, विज्ञानभूषण से अनिल चतुर्वेदी को, पत्रकारिता भूषण से नन्दकिशोर नौटियाल को, प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण से सत्येन्द्र श्रीवास्तव को, बाल साहित्य भारती से विद्या गुप्त को एवं विश्वविद्यालय स्तरीय सम्मान से डॉ० कृष्णचन्द्रलाल एवं जयसिंह नीरद को सम्मानित किया गया। हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान के लिए चुनी गईं सुशीला शर्मा हक एवं सुषमा बेदी तथा विद्या भूषण के लिए चुनी गईं प्रतिमा अस्थाना समारोह में उपस्थित नहीं थी।

समारोह में शैलेन्द्र सागर, सुशील सिद्धार्थ, दयानन्द पाण्डेय, रोशन प्रेमयोगी सहित 25 लेखकों-सम्पादकों को पुस्तकों के लिए नामित पुरस्कार दिए गए।

सारस्वत सम्मान

मैं गाँव की जमीन से जुड़ा एक मामूली इन्सान हूँ, मामूलीपन ही मेरी पहचान और मेरी ताकत है। यह बात 2 फरवरी 2007, शुक्रवार को डॉ० रामदरश मिश्र ने सरयू नारायण इण्टर कॉलेज, कानपुर में आयोजित एक सम्मान समारोह में की। समारोह में डॉ० रामदरश मिश्र को 'सारस्वत सम्मान' से विभूषित किया गया।

समारोह में जहाँ अरुण प्रकाश अग्निहोत्री ने डॉ० मिश्र को ताम्र पत्र एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। वहीं लगभग पचास संस्थाओं ने उन्हें अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न से सम्मानित किया। कार्यक्रम में सपत्नीक मौजूद डॉ० मिश्र ने कहा कि जमीन से जुड़ा हर शख्स अपनी शख्सियत बना सकता है। उसके हाथ में कलम और दिल में भाव हो तो साहित्य लेखन लोगों की कसौटी पर खरा उतर सकता है। उन्होंने कहा कि कनपुरियों का प्रेम उन्हें कानपुर खींच लाया।

बृजेन्द्र अवस्थी-कैलाश गौतम को मरणोपरान्त यशभारती

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने राष्ट्रीय स्तर के कवि एवं साहित्यकार कैलाश गौतम एवं बृजेन्द्र अवस्थी को मरणोपरान्त यशभारती पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय किया है। उल्लेखनीय है कि श्री अवस्थी का निधन हाल ही में हुआ है, जबकि कैलाश गौतम का निधन कुछ माह पूर्व हो गया था। दोनों ही व्यक्तियों के परिवारीजनों को यह सम्मान मुख्यमंत्री स्वयं सौंपेंगे।

व्यंग्यश्री सम्मान 2007

हिन्दी व्यंग्य विनोद के यशस्वी रचनाकार

स्व० पं० गोपालप्रसाद व्यास की जयन्ती के उपलक्ष्य में हिन्दी प्रतिष्ठित व्यंग्य-लेखिका **डॉ० सूर्यबाला** को मंगलवार, 13 फरवरी 2007 को डॉ० निर्मला जैन की अध्यक्षता में हिन्दी भवन, नई दिल्ली में व्यंग्यश्री सम्मान 2007 से सम्मानित किया गया।

हमारी नवीनतम शोधें बताती हैं कि कुछ ग़लत दस्तावेजों और पुस्तकों के आधार पर हम हिन्दी को बीसवीं शताब्दी के हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्कभाषा या मातृभाषा जैसा कुछ मान बैठते हैं। पर हकीकत तो यह है कि वह इनमें से कुछ भी नहीं थी। ये सारे तथ्य भ्रामक हैं। शोध बताती है कि दरअसल हिन्दी भाषा थी ही नहीं। वह खास-खास अवसरों पर पहनी जाने वाली पोशाक थी, लगाया जाने वाला मुखौटा थी। यह एक डफली थी, जिस पर लोग अपने-अपने राग गाया करते थे। वह चश्मा थी, जिसे लगाकर अनुदानों, पुरस्कारों की छाया में सांस्कृतिक यात्राओं का सुख लूटा जा सकता था। वह एक सीढ़ी थी, जिसके सहारे अकादमियों के मंच तक पहुँचा जा सकता था। **—डॉ० सूर्यबाला**

साहित्य अकादमी पुरस्कार से ज्ञानेन्द्रपति सम्मानित

हिन्दी के चर्चित कवि **ज्ञानेन्द्रपति,** उर्दू के जाने-माने शायर मख्यूर सईदी और मैथिली के लेखक विभूति आनन्द समेत 24 साहित्यकारों को 20 फरवरी 2007 को वर्ष 2006 के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वाराणसी के ज्ञानेन्द्रपति को उनकी कविता संग्रह 'संशयात्माक' के लिए सम्मानित किया गया है।

राजधानी के कमानी सभागार में एक भव्य एवं गरिमापूर्ण समारोह में अकादमी के अध्यक्ष एवं उर्दू के प्रख्यात आलोचक डॉ० गोपीचंद नारंग ने इन लेखकों को ये पुरस्कार प्रदान किए। पुरस्कार में 50-50 हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र तथा एक प्रतीक चिह्न आदि शामिल है। समारोह में रूपा बाजवा को अंग्रेजी, शफी शौक को कश्मीरी, अमर मित्र को बंगला, रतिलाल अनिल को गुजराती, लक्ष्मीनारायण रंगा को राजस्थानी, हर्षदेव माधव को संस्कृत, आशा बेग को मराठी, भीम दाहाल को नेपाल, वंशीधर षडंगी, एम० सुकुमारन को मलयालम, एमएम कुलवुर्गि को कन्नड़, दर्शन दर्शी को डोगरी, कातिन्द्र सोरगियारी को बोडो, अतुलानंद गोस्वामी को असमिया, अजमेर सिंह औलख को पंजाबी, रामचन्द्र मुर्मू को संथाली, कीरत बावाणी को सिंधी तथा मु० मेहता को तमिल एवं मुनपिल्ले बि० राजू को तेलुगु के लिए पुरस्कार दिया गया।

जब तक राजनीतिज्ञों को संस्कृति की गहरी समझ नहीं होगी, तब तक देश का विकास नहीं होगा और बिहार तथा झारखण्ड के नेताओं में इस समझ की भयंकर कमी है। राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं में भारतीय संस्कृति की गहरी समझ थी इसलिए उनके राजनीतिक मूल्य दूसरे थे और आजादी के बाद शासन की बागडोर कुछ समय तक ऐसे नेताओं के हाथ में रही इसलिए राजनीति का उतना पतन नहीं हुआ, लेकिन धीरे-धीरे राजनीतिज्ञों में संस्कृति के प्रति अरुचि पेदा होती गयी। बल्कि वे अपसंस्कृति को बढ़ावा देने लगे जिसके कारण समाज में चारों तरफ पतन होता गया। बिहार में पिछले तीन चार दशकों में यह पतन काफी हुआ क्योंकि वहाँ के राजनीतिक नेतृत्व में संस्कृति को लेकर कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी जिसके कारण वहाँ की साहित्यिक संस्थाएँ चौपट हो गयी। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् और बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी संस्थाओं का पतन होता गया और राज्य सत्ता ने धीरे-धीरे अपना समर्थन देना बन्द कर दिया। यही कारण है कि वहाँ के पुरस्कारों और प्रकाशनों का अब कोई अर्थ नहीं रह गया जबकि एक समय उसकी गरिमा और महत्ता होती थी। **—ज्ञानेन्द्रपति**

'वीणा' के श्रेष्ठ सम्पादन के लिए बृजलाल द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान डॉ० श्यामसुन्दर व्यास को

पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान 2006 देश की सर्वाधिक प्राचीन मासिक पत्रिका 'वीणा' के सम्पादक डॉ० श्यामसुन्दर व्यास को प्रदान किया गया है। अक्टूबर 1927 से इन्दौर से सतत प्रकाशित होने वाली 'वीणा' के 80 वर्ष के साहित्यिक योगदान के लिए इस सम्मान के लिए चुना गया। डॉ० व्यास पिछले 35 सालों से 'वीणा' के सम्पादक हैं।

'वीणा' सम्पादक को 11 हजार रुपये व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सरस्वती सम्मान

उड़िया के सुप्रसिद्ध लेखक **डॉ० जगन्नाथ प्रसाददास** को उनकी कविताओं के संग्रह 'परिक्रमा' के लिए प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान हेतु चयन किया गया है। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी डॉ० दास इस सम्मान को पाने वाले 16वें व्यक्ति होंगे। यह पुरस्कार प्रति वर्ष किसी भी भारतीय भाषा में उल्लेखनीय लेखन और गत दस वर्षों में प्रकाशित कृति पर के०के० बिरला फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता है। पुरस्कार स्वरूप पाँच लाख की राशि प्रदान की जायगी। सम्मान चयन समिति के अध्यक्ष थे सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री जी०बी० पटनायक।

साहित्य-भूषण सम्मान

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के पुरस्कार समारोह में **श्री अमरनाथ शुक्लजी** को उनके सम्पूर्ण सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अवदानस्वरूप 'साहित्य भूषण' सम्मान से सम्मानित कर प्रशस्ति पत्र, शाल तथा एक लाख रुपये की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई।

अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार

भाषण देते हुए गीतकार श्री विट्ठलभाई पटेल तथा समारोह में उपस्थित विशिष्टजन

स्व० अम्बिकाप्रसाद 'दिव्य' की स्मृति में, राष्ट्रीय ख्याति का दसवाँ दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार वितरण समारोह गत 7 जनवरी 07 को वरदान होटल, सागर के सभागार में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि थे प्रख्यात पत्रकार, कवि श्री गिरधर राठी। श्री राठी ने दिव्यजी को रायकृष्णदास एवं वासुदेवशरण अग्रवाल की श्रेणी का रचनाकार बताया। अध्यक्षता की पूर्व कुलपति श्री शिवकुमार श्रीवास्तव ने। आपने कहा कि दिव्यजी अपने युग के बड़े हस्ताक्षर थे। दिव्य पुरस्कारों के संयोजक श्री जगदीश किंजल्क ने अपने स्वागत भाषण में घोषणा की कि यह वर्ष दिव्यजी का जन्म शताब्दी वर्ष है। इस बार दिव्य रजत अलंकरणों के लिए साहित्यिक पत्रिकाओं को भी शामिल किया जायेगा। डॉ० उर्मिला शिरीष (भोपाल), श्रीमती रश्मि रमानी (इन्दौर), श्री पवन चौधरी 'मनमौजी' (दिल्ली) एवं डॉ० श्रीमती बानो सरताज (चन्द्रपुर) को प्रतिष्ठापूर्ण दिव्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। चौबीस अन्य रचनाकारों को दिव्य रजत अलंकरण प्रदान किये गये।

डॉ० त्रिवेदी को बुध सिंह बापना स्मृति सम्मान

'नवोदित स्वर' के प्रधान सम्पादक तथा साहित्य मनीषी **डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी** को गत 28 जनवरी, 2007 को राजस्थान के कोटा महानगर में बुध सिंह बापना स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। 'राजस्थान साहित्य अकादमी' उदयपुर के सौजन्य एवं 'भारतेन्दु समिति' कोटा के सहयोग से अखिल भारतीय परिषद कोटा द्वारा उक्त सम्मान दो दिवसीय सम्भागीय साहित्यकार सम्मेलन तथा अन्तरप्रान्तीय संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में प्रदान किया गया। 'राजस्थान साहित्य अकादमी' उदयपुर के सौजन्य एवं 'भारतेन्दु समिति' कोटा के सहयोग से अखिल

भारतीय परिषद, कोटा द्वारा उक्त सम्मान दो दिवसीय समभागीय साहित्यकार सम्मेलन तथा अन्तरप्रान्तीय संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में प्रदान किया गया।

समारोह के अध्यक्ष शिक्षाविद नगेन्द्रकुमार सक्सेना, कोटा की प्रथम मेयर रहीं श्रीमती सुमन श्रृंगी, बहुभाषाविद् प्रो० एल०डी० पुरोहित (जामनगर) परिषद् के अध्यक्ष अरविन्द सोरल और संयोजक रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया' ने पत्रं पुष्पम् के साथ ही अंगवस्त्रम्, प्रशस्ति-पत्र और स्मृति चिह्न द्वारा डॉ० त्रिवेदी को अभिनन्दित किया।

आयोजक और सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्री त्रिवेदी ने विश्व के सर्व पुरातन ग्रन्थ ऋग्वेद को उद्धृत करते हुए कहा कि रचनाकार में अग्नि की तेजस्विता और उसके साथ ही समुद्र की गहराई अपरिहार्य रूप से होनी अपेक्षित है।

नरेश मेहता वाङ्मय सम्मान

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति एवं पं० रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास, भोपाल द्वारा 4 फरवरी 2007 को विशिष्ट विद्वान् डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डेय की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में **डॉ० वासुदेव पोद्दार** को नरेश मेहता सम्मान से अलंकृत किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री आर०सी० लाहोटी ने कहा—जिन बिन्दुओं पर आज वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं, हमारे ऋषियों ने उन्हें अपने ग्रन्थों में पूर्व ही लिख दिया है।

अलंकृत डॉ० वासुदेव पोद्दार ने अपने शोधपूर्ण व्याख्यान में कहा—भारतवर्ष का तत्त्वशास्त्र 'माइथोलॉजी' नहीं वह स्वयं में यथार्थ का तत्त्व दर्शन है।

चित्रकुमार कथा पुरस्कार

इस अवसर पर **श्रीमती अल्पना मिश्रा** को श्री शैलेश मटियानी स्मृति सम्मान 2006 के अन्तर्गत चित्राकुमार पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

साहित्य कृति सम्मान

इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, नई दिल्ली ने वयोवृद्ध साहित्यकार **डॉ० रामशरण गौड़** को सर्वोच्च 'साहित्य भारती सम्मान' से तथा अन्य साहित्यकारों को विभिन्न साहित्यकार सम्मान से सम्मानित किया।

अध्यक्षता डॉ० देवेन्द्र आर्य ने की, विशिष्ट अतिथि थे भारत भवन, भोपाल के अध्यक्ष दयाप्रकाश सिन्हा।

क्रासवर्ड बुक अवार्ड

दो विक्रमों लेखक **विक्रम चंद्रा** (सेक्रेड गेम्स) और **विक्रम सेठ** (टू लीव्ज) को 2006 हच क्रासवर्ड बुक अवार्ड मुम्बई में प्रदान किया गया। श्री चंद्रा को जहाँ अंग्रेजी फिक्शन श्रेणी में पुरस्कृत किया गया वहीं श्री सेठ को अंग्रेजी नॉन फिक्शन श्रेणी में अवार्ड दिया गया। भारतीय भाषा फिक्शन अनुवाद श्रेणी में **सीएस लक्ष्मी** की पुस्तक 'इन ए फारेस्ट, ए डीयर' (अनुवाद-लक्ष्मी हॉल्मस्ट्राम) और **एम कुकंदम** की पुस्तक 'केसवंस लेमेंटेशंस' (अनुवाद : एजे थामस) को संयुक्त रूप से पुरस्कृत किया गया है। बुकर पुरस्कार विजेता **किरन देसाई** को उनके उपन्यास 'द इनहेरिटेंस ऑफ' लास के लिए हच क्रासवर्ड पापुलर बुक अवार्ड से सम्मानित किया गया है। पुरस्कार विजेताओं ने ये सम्मान 21 फरवरी 2007 को प्रख्यात लेखक कृष्णा सोबती और रीमा आनंद ने प्रदान किए। लन्दन में रह रहीं सुश्री देसाई सम्मान समारोह में मौजूद नहीं थीं।

अनुवाद श्रेणी को छोड़कर बाकी सभी विजेताओं को तीन लाख रुपये नगद और ट्राफी दी गई। जबकि अनुवाद की श्रेणी में दो लाख रुपये नगद दोनों विजेताओं को संयुक्त रूप से दिए गए।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के पुरस्कार

वाराणसी के संस्कृत विद्वान् **प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी** को वर्ष 2006-07 के उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के दो लाख 51 हजार राशि के सर्वोच्च विश्व भारती पुरस्कार से अलंकृत किया जायगा।

वाराणसी के ही **वशिष्ठ त्रिपाठी** को एक लाख राशि का वाल्मीकि पुरस्कार और इतनी ही राशि के पहले व्यास पुरस्कार से गुड़गाँव के प्रो० श्रीधर वशिष्ठ को सम्मानित किया जायेगा। संस्कृत पत्रकारिता के 51 हजार रुपये के पहले नारद पुरस्कार के लिये कानपुर के प्रकाश मित्र शास्त्री को चुना गया है।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के निदेशक प्रमोदकुमार पाण्डेय के अनुसार 51-51 हजार राशि के पाँच विशिष्ट पुरस्कारों के लिये वाराणसी के प्रो० पारसनाथ द्विवेदी, प्रो० शिवजी उपाध्याय व प्रो० विमला कर्नाटक, हरदोई के प्रो० शिवसागर त्रिपाठी और इलाहाबाद के प्रो० भास्कराचार्य त्रिपाठी का चयन हुआ है। 25-25 हजार के *वेद पण्डित पुरस्कार* चमनलाल त्रिवेदी, मनोज कुमार पाण्डेय, लखी ढकाल, शिवकांत पाण्डेय, शिवशक्तिप्रसाद द्विवेदी और चिन्तामणि शुक्ल (सभी वाराणसी), भास्करदेव मिश्र, विनयकुमार त्रिपाठी (बस्ती), रंगनाथ त्रिपाठी (गोरखपुर), व महेश तिवारी (गाजियाबाद) को और इतनी ही राशि के चार *नामित पुरस्कार* प्रो० दशरथ द्विवेदी (गोरखपुर), प्रो० जयमंत मिश्र (दरभंगा), डॉ० हरिनारायण तिवारी (जम्मू) व डॉ० रामराज उपाध्याय (दिल्ली) को उनकी पुस्तकों पर प्रदान किये जायेंगे। ग्रन्थों पर ही 11-11 हजार के छह पुरस्कार डॉ० अनीता सोनकर (लखनऊ), डॉ० इला घोष (जबलपुर), प्रो० ओमप्रकाश पाण्डेय (लखनऊ), डॉ० बलभद्रप्रसाद शास्त्री (बरेली), प्रो० राधेश्याम चतुर्वेदी (वाराणसी) व डॉ० लोकमान्य मिश्र (मुम्बई) को मिलेंगे। पुस्तकों पर ही चुने गये पाँच-पाँच हजार के 20 विविध पुरस्कारों के लिये डॉ० विजयकुमार कर्ण (लखनऊ), डॉ० रमेशचन्द्र जैन (बिजनौर), डॉ० भारतभूषण मिश्र (जम्मू), डॉ० रमेशचन्द्र जैन (बिजनौर), डॉ० भारतभूषण मिश्र (जम्मू), डॉ० रामसुमेर यादव (लखनऊ), डॉ० पर्णदत्त सिंह, डॉ० शिवराम शर्मा, डॉ० रामकिशोर शर्मा, प्रो० रमाशंकर मिश्र मधुप, डॉ० रामरंजन मालवीय, डॉ० जमुना पाठक, डॉ० उमादेवी जोशी (सभी वाराणसी), डॉ० जयकांत सिंह शर्मा (दिल्ली), डॉ० नवलता (लखनऊ), डॉ० केशवराम शर्मा (दिल्ली), डॉ० कैलाशनाथ द्विवेदी (जालौन), संतोष मित्तल (जयपुर), डॉ० विजयकुमार जैन (लखनऊ), डॉ० खालिद बिन यूसुफ खाँ (अलीगढ़), डॉ० श्यामाकांत द्विवेदी (सीधी) व प्रो० गंगाधर पण्डा (वाराणसी) की पुस्तकों को चुना गया है।

6 विद्वानों को वैदिक पुरस्कार

भारतीय विद्या भवन ने वर्ष 2005 के वैदिक पुरस्कारों के लिए छह विद्वानों का चयन किया है। जिन विद्वानों को श्री गुरु ज्ञानेश्वरानंद वेदरत्न पुरस्कार-2005 के लिए चुना गया है उनके नाम हैं—एन०एस० अनंत रंगाचार्य (कर्नाटक), पी०एस० अनंतनारायण सोमायाजी (तमिलनाडु), श्रीनिवास त्रिपाठी और कपिलदेव द्विवेदी (उत्तर प्रदेश), के०बी० बालासुब्रमण्यम (आन्ध्र प्रदेश) और दामोदर झा (पंजाब)। इस पुरस्कार के रूप में इन लोगों को एक-एक लाख रुपये रविवार, 24 फरवरी 2007 को प्रदान किये गये।

चौरासी वैष्णव वार्ता

श्री विट्ठलदास पारीख एवं श्री गोपालकृष्ण पाठक

प्रकाशक :
गिरिधर प्रकाशन, श्री गोपाल मन्दिर, वाराणसी
मूल्य : 150.00

चौरासी वैष्णव वार्ता वल्लभ सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में चौरासी वैष्णवों के पूर्व जन्मों का परिचय और वल्लभाचार्यजी के साथ उनका जीवनवृत्त वर्णित है। अभी तक यह ग्रन्थ गुजराती और ब्रजभाषा में उपलब्ध था। इसके हिन्दी में प्रकाशन से एक अभाव की पूर्ति हुई है। हिन्दी साहित्य में जीवनी कथा का यह प्रमुख ग्रन्थ है। कृष्ण साहित्य के अध्येताओं को यह ग्रन्थ अर्थबोध करायेगा। काशी का गोपाल मन्दिर वैष्णव समाज की तीर्थस्थली है, और काशी का गौरव है। एक ओर शिव का डमरू निनाद करता है तो दूसरी ओर कृष्ण की वंशी बजती है। ऐसे स्तुत्य प्रकाशन के लिए लेखक तथा सम्पादक श्री श्याममनोहर महाराज जी को अनेकशः साधुवाद।

स्मृति-शेष

कथाकार कमलेश्वर नहीं रहे

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी नयी कहानी के सूत्रधारों—मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव में अग्रगणी **कमलेश्वर** नहीं रहे। शनिवार, 27 जनवरी 2007 को रात्रि साढ़े-ग्यारह बजे 75 वर्षीय कमलेश्वर ने सूरजकुण्ड (हरियाणा) स्थित अपने आवास में अन्तिम साँस ली।

नयी कहानी की शुरुआत कर समांतर कहानी का आन्दोलन चलाकर युवा कहानीकारों को प्रेरित किया। 'राजा निरबंसिया' सर्वप्रथम 'कहानी' पत्रिका में प्रकाशित हुई। 'सारिका' के माध्यम से देशव्यापी समांतर कहानी आन्दोलन चलाया, आज की भयावह परिस्थितियों में आम आदमी के संघर्ष को वाणी देने का प्रयास किया। कथात्रयी के प्रमुख कमलेश्वर ने अपने गद्य में मानवीय सम्बन्धों की जटिलता, अनुभव के घनत्व, अनुभूति की ताजगी, संयम और तनाव को अभिव्यक्ति प्रदान की। अपनी रचनाओं में संवेदना का सृजन करते हुए अन्तदृष्टि प्रदान की। वर्तमान परिवेश के प्रति सजग और संवेदनशील कमलेश्वर के बहुआयामी चिन्तनशील व्यक्तित्व ने सृजन के सभी माध्यमों का प्रयोग किया।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास ने अभूतपूर्व ख्याति प्रदान की। 6 वर्षों में 12 संस्करण प्रकाशित हुए। 20 भाषाओं में अनूदित होकर प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली।

कहानी उपन्यास, आत्मकथा, डायरी, यात्रा, बाल साहित्य, समीक्षा साहित्य की समस्त विधाओं को अपनी सृजन चेतना से सम्पन्न किया। एक कथाकार के रूप में हिन्दी पाठक उन्हें सदा स्मरण करते रहेंगे। ऐसे साहित्यस्रष्टा कभी-कभी ही अवतरित होते हैं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह ने अपनी 1 फरवरी 2007 की गाजीपुर यात्रा में घोषित किया है कि कमलेश्वर, कैलाश गौतम तथा ब्रजेश्वर को मरणोपरांत **यशभारती** पुरस्कार प्रदान करेंगे।

कमलेश्वर

(कमलेश्वरप्रसाद सक्सेना)

जन्म : 6 जनवरी 1932 **निधन :** 27 जनवरी 2007

जन्म : मैनपुरी, उत्तर प्रदेश

शिक्षा : इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए०।

सम्मान : साहित्य अकादमी पुरस्कार (2003), शिखर साहित्य सम्मान (हिमाचल सरकार), पद्मभूषण (1995), भारत भारती सम्मान, शलाका सम्मान

सम्पादन : विशन, इंगित, नई कहानियाँ, सारिका, कथायात्रा, श्रीवर्षा और गंगा। दैनिक जागरण तथा दैनिक भास्कर से भी संबद्ध रहे। 1980-82 में दूरदर्शन के महानिदेशक। कथा संस्कृति कोश।

रचनाएँ

उपन्यास : एक सड़क सत्तावन गलियाँ (1957 ई०), डाक बँगला (1959), लौटे हुए मुसाफिर (1961 ई०), समुद्र में खोया हुआ आदमी (1967 ई०), काली आँधी (1974 ई०), तीसरा आदमी (1976 ई०), आगामी अतीत (1976 ई०), वही बात (1980 ई०), सुबह दोपहर शाम (1982 ई०), रेगिस्तान (1988 ई०), **कितने पाकिस्तान** (2000) 12 संस्करण प्रकाशित, 20 भाषाओं में अनुवाद।

कहानी : राजा निरबंसिया (1957 ई०), कस्बे का आदमी (1958), खोई हुई दिशाएँ (1963), मांस का दरिया (1966), बयान (1973), समग्र कहानियाँ (2001), आजादी मुबारक (2002)।

आत्मकथा : जो मैंने जिया (1992 ई०), यादों का चिराग (1997), जलती हुई नदी (1999)।

डायरी : देश देशांतर

यात्रा : खण्डित यात्राएँ (1975), कश्मीर रात के बाद (1997), आँखों देखा पाकिस्तान (2006)।

समीक्षा : नई कहानी की भूमिका।

संवाद, पटकथा, टीवी सीरियल, दूरदर्शन : आकाश गंगा, रेत पर लिखे नाम, दर्पण, चन्द्रकांता, पत्रिका परिक्रमा, बंद फाइल, आँधी (फिल्म), सारा आकाश, मौसम (फिल्म), रजनीगंधा, छोटी सी बात, मि० नटवरलाल, मदर टेरेसा की लाइब कमेंटरी कोलकाता में।

बाल साहित्य : होताम के कारनामे

कमलेश्वर को श्रद्धांजलि

साहित्यानुशीलन समिति, चेन्नई ने 30 जनवरी 2007 को नगर के लेखकों और कवियों की सभा गोपालपुरम स्थित राजेन्द्र बाबू भवन में हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० बाल शौरि रेड्डी के सभापतित्व में आयोजित की। बैठक में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा, मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ० सैय्यद रहमतुल्ला, हिन्दी हृदय के सम्पादक डॉ० सुब्रह्मण्यन विष्णुप्रिया, समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की उच्च शिक्षा प्रमुख डॉ० निर्मला मौर्य, राजभाषा अधिकारी पी०आर० वासुदेवन ने कमलेश्वर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये। स्टेला मेरीज़ कालेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० विद्या शर्मा ने दिवंगत कहानीकार को काव्यमय श्रद्धांजलि अर्पित की।

रंगमंच के कलाकार कुमुद नागर नहीं रहे

प्रख्यात साहित्यकार अमृतलाल नागर के चिरंजीव, उनसे प्राप्त रंगकर्म को विकसित करने वाले **कुमुदनागर** का शनिवार, 17 फरवरी 2007 को प्रातः हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। वे 71 वर्ष के थे। 1953 में अपने पिता द्वारा निर्देशित नाटक 'गोदान' से रंगकर्म में प्रवेश किया। छह वर्षों बाद वे आकाशवाणी की प्रसारण सेवा से जुड़े और उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कीर्ति अर्जित की।

अमृतलाल नागर पर एक पुस्तक लिखी **वटवृक्ष की छाया में** इसका प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन ने किया। उस समय कई बार वे काशी आये। उनके निधन से एक आत्मीय कलाकार का अभाव सदैव बना रहेगा। उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रो० वासुदेव सिंह का निधन

काशी विद्यापीठ, वाराणसी में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष व साहित्यकार **प्रो० वासुदेव सिंह** का 27 जनवरी 2007, शनिवार को सर सुंदरलाल चिकित्सालय में निधन हो गया। 1995 में सेवानिवृत्त प्रो० सिंह काशी विद्यापीठ में विगत वर्ष तक कार्यपरिषद के सदस्य भी थे। कुलपति प्रो० एसएस कुशवाहा ने उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया। प्रो० सिंह के परिवार ने उनकी आँखें दान की।

डॉ० ब्रजेन्द्र अवस्थी का निधन

वीररस के प्रख्यात आशुकवि **डॉ० ब्रजेन्द्र अवस्थी** का अल्प बीमारी के बाद 77 साल की आयु में लखनऊ के संजय गाँधी अस्पताल में 22 जनवरी 2007 की रात्रि 2 बजे निधन हो गया। हिन्दी जगत अवस्थीजी के अचानक निधन से स्तब्ध रह गया।

तीन सप्ताह पूर्व ही अवस्थीजी के जन्म स्थान अलीगंज (लखीमपुर खीरी) में 1 जनवरी के दिन एक भव्य समारोह में उनका जन्म-दिवस सोत्सह मनाया गया था। उसी दिन उनका अन्तिम महाकाव्य 'आदि जगद्गुरु शंकराचार्य' छपकर प्रेस से आया था। उन्होंने पाँच महाकाव्यों तथा दो दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचना की है। उनकी कई अप्रकाशित रचनाएँ भी हैं।

कथन

संस्कृत, संस्कृति, संस्कार

भाषा का आविष्कार इतिहास की प्राचीनतम घटना है। मनुष्य की सामूहिकता के कारण बोली आई, लिखित भाषा बाद में। फिर सभ्यता आई। यूरोप की सभ्यता यूनानी है। यूनान जर्मनी से पहले सभ्य हुआ, भारत यूनान से भी पहले। यूनानी दर्शन के हजारों बरस पहले भारत का ऋग्वैदिक दर्शन सृष्टि रचना के आदि तत्त्व की व्याख्या कर चुका था। यूनानी सभ्यता की विकास भूमि क्रीट द्वीप है। क्रीट की कला के विश्लेषक रेनाल्ड हिगिंस के अनुसार ईसा के 2800 बरस पहले लघु एशिया के प्रवासी वहाँ सभ्यता ले गए। क्रीट के क्रोसोस नगर के प्रथम शासक मिनोस के नाम पर इसे मिनोअन सभ्यता कहा गया।

यूनानी सभ्यता संस्कृति और दर्शन का विकास भारतीय सम्बन्धों से हुआ। ऋग्वेद के मनु, मिस्र के प्रथम राजा मेनस और यूनान (क्रीट) के प्रथम शासक मिनोस भाषा की दृष्टि से संस्कृत के और संस्कृति की दृष्टि से भारतीय तत्त्व हैं। इंग्लैण्ड की सभ्यता यूनान की उधारी है। अंग्रेजी स्वयं में मूल भाषा नहीं है। संस्कृत का दिव्य ही अंग्रेजी का डिवाइन है।

—हृदयनारायण दीक्षित

लोक साहित्य

आधुनिक कला माध्यमों का आतंक इतना गहरा हो गया है कि इसके साये में लोक साहित्य बिसराया जा रहा है। आधुनिक व औद्योगिक सभ्यता के चलते अब लोकोक्तियाँ, मुहावरे, लोक कथाएँ व किवदंतिया खत्म न हो जाय इसका खतरा बढ़ गया है। महानगर व आसपास के इलाके में विकास ने जहाँ हमारी खेती को पूरी तरह चौपट कर कंक्रीट का जाल बिछा दिया है वहीं अब वह दिन दूर नहीं जब बच्चा पैदा होने पर हमें सोहर गाने वाली महिलाएँ ही नहीं मिलेंगी। लोक परम्परा से जुड़ी सोहर, कजरी व चैती अब सिर्फ लोगों को कैसेट से ही सुनने को मिलेगा।

लोक साहित्य की जहाँ बात आयेगी, वहाँ हिन्दी भाषा को अपना जीवन समर्पित करनेवाले रामनरेश त्रिपाठी और देवेन्द्र सत्यार्थी जैसे महान व्यक्तित्व को याद किया जायगा। धार्मिक और साहित्यिक नगरी काशी हमारे हृदय में बसी है और शायद उन साहित्यकारों के हृदय के किसी कोने में बसा ही होगा, जिससे हमारी संस्कृति जीवित रहेगी। **—डॉ० नामवर सिंह**

गीत मरेगा नहीं

साहित्य में छंद मुक्त कविता लिखने वाले ज्यादा लोकप्रिय नहीं हैं। गीतकार सभी लोकप्रिय रहे। हिन्दी गीतों का भविष्य उज्ज्वल है, गीत चलेगा, गीत कभी मरने वाला नहीं है। गीत का मतलब लय है। नदी लय में बहती है, हवा लय में बहती है, हमारा दिल लय में धड़कता है, हम जो बोलते हैं वह भी लय में। यह सिलसिला चलता रहेगा, क्योंकि गीत जब मर जाएगा, केवल धुआँ रह जाएगा, हम सिसकते आँसुओं का कारवां रह जाएगा।

मैं तो मस्त फकीर मेरा कोई नहीं ठिकाना रे / जैसा अपना आना प्यारे वैसा अपना जाना रे / रामघाट पर सुबह गुजारी प्रेमघाट पर शाम रे /औरों का धन सोना चाँदी अपना धन तो प्यार रहा / दिल से दिल का होता है वह अपना व्यापार रहा।

—गोपालदास 'नीरज'

राजकीय साहित्यकार सम्मान

पुरस्कार, सम्मान और अभिनन्दन के कई स्वरूप हैं, राजकीय सम्मान मेरे विचार से राज्य के पक्ष में ही है, जिसे सम्मानित किया जाता है उसके पक्ष में नहीं। **—आलोचक डॉ० बच्चन सिंह**

आज साहित्य अकादमी के पुरस्कारों को छोड़ दें तो ज्यादातर पुरस्कार, पुरस्कार नहीं.... खैरात हैं। उनका साहित्य और कला के अवदान या स्तर से कोई लेना-देना नहीं है।

—साहित्यकार काशीनाथ सिंह

कविता का प्रतिरोध

यह शब्दों के अवमूल्यन और भाषा के सिमटते जाने का दौर है। तथाकथित विश्वग्राम की अवधारणा ने हमारे बहुलतावादी सोच को एक से पन की दुनिया से भर दिया है। ऐसे संसार को कविता से कोई लेना देना नहीं है जहाँ हमारी सच्ची मानवीयता और सपनों का वास है। लेकिन कविता है कि अपना स्थान छिनते जाने के बावजूद हाशिये पर खड़ी होकर भी जीवन की असलियत और सजगता और विविधता की रक्षा के लिए प्रतिरोध कर रही है।

आज सूचना संचार के फैलते हुए से जाल में ज्ञान आधारित समाज कर्मेन्द्रियों की भूमिका को भूल रहा है। फिर कविता से उसका कोई लेना देना नहीं है। शब्द और भाषा की लगातार अवहेलना हो रही है। जीवन शैली एक-सी होती जा रही है। विविधता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। सच्ची कविता की जरूरत समाज को सदा से रही है। कविता हमेशा ही इस संसार में रची जाती रहेगी।

—अशोक वाजपेयी

भूमण्डलीकरण और हिन्दी

आज भूमण्डलीकरण, विदेशी पूँजी तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बढ़ते प्रशस्त कदम से हमारे देश में विकसित हो रही उपभोक्ता संस्कृति के दौर में हमारी भाषा की अस्मिता खतरे में पड़ गई है।

बाजारवाद ने जहाँ विश्व को ग्राम बनाया अर्थ के स्वतंत्र विचरण के सारे रास्ते मुक्त किये, वहीं मानव-हृदय को संकीर्ण भी किया, व्यक्ति लाभ ही सर्वोपरि हो गया है। समाज सहकार की बातें पुरानी पड़ने लगी है।

भूमण्डलीकरण के दौर में अंग्रेजी का वर्चस्व पूरे विश्व में बढ़ा है, भारत भी अछूता नहीं। उसने अपने रंग में हिन्दी को भी रँगने की कोशिश की है कि एक नयी भाषा 'हिंग्लिश' के गठन की बात की जा रही है। पर इस नये परिवर्तन को लेकर हमें बहुत चिन्तित होने की जरूरत नहीं है। हिन्दी की तो अपने जन्म से यही विशेषता है कि वह अपने सम्पर्क में आई भाषाओं के रूप-रंग-रस से अपने

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
पता	चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	पुरुषोत्तमदास मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(दिनांक १ मार्च, २००७)

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(अनुरागकुमार मोदी)

को निरन्तर सजाती, नित नये परिधान को धारण करती सामासिक संस्कृति का प्राणत्व आत्मसात कर निरन्तर आगे बढ़ती रही है यही उसकी जीजिविषा का प्रयास भी है और अमरत्व का प्रमाण भी। वह सदैव आगे बढ़ती ही रहेगी नये रंग और नयी आभा के साथ। अर्थतंत्र के युग में तो हिन्दी उत्पादन, बाजार और विज्ञापन की भाषा बनी है, संचार माध्यमों ने भले उसके स्वरूप तथा, आभिजात्य को बिगाड़ने की कोशिश की है, किन्तु हिन्दी को लोकप्रिय तथा प्रसारित करने का कार्य भी किया है। आज अहिन्दीभाषी क्षेत्रों की युवा तथा बाल पीढ़ी धड़ल्ले से हिन्दी कह-सुन और गा रही है जो दस वर्ष पूर्व नहीं देखने को मिलता था। जब तक बाजार है, अर्थ उदारीकरण है हिन्दी को कोई खतरा नहीं। हाँ उसके रूप-रंग और अर्थ-सन्दर्भ जरूर बदलेंगे।

—डॉ० कुसुम राय, बर्दवान (प०बं०)

बापू

उठो नारी
मत हो विकल
चेतना को जागृत कर
उत्साहित हो
इस गाँधी प्रांगण में।
तुम्हें देख रहे हैं—
बापू
तुम्हारी ओर दृष्टि किए
अनुभव की विविधता का आभास
प्रति ध्वनित कर
'संधि-पत्र' को प्रतीक बना
जीवन को आत्मीयता से जोड़
सुख-शान्ति की अनुभूति कराते
राष्ट्रभाषा की उदात्ता की ओर
उन्मुख होने का
दिशा निर्देश कर रहे हैं।

—मालती दुबे, अहमदाबाद

जब आप पढ़ते हैं तो अच्छे लोगों की सत्संग में रहते हैं। **—रवे सिडनी स्मिथ**

कहावतों की भाँति पुस्तकों को भी जो महत्त्व मिला है वह उस आदर तथा प्रभाव के कारण प्राप्त हो सका है जो उन्होंने युगों की यात्रा के पश्चात् अर्जित किया है। **—सर विलियम टैम्पल**

कान्तिकुमार जैन की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक

अब तो बात फैल गई

मध्यकाल की प्रसिद्ध कवयित्री मीराबाई ने कृष्ण से अपने निविड़ प्रेम के लिए कहा था—''अब तो बात फैल गई जाने सब कोई''। अपनी दीवानगी के लिए आत्मस्वीकृति की मुद्रा में बिल्कुल उसी शिद्दत से कह रहे हैं—''अब तो बात फैल गई''। अब सब यह जानने और मानने लगे हैं कि ''पाठक कहानियाँ, कविता जैसी विधाएँ बाद में पढ़ता है, संस्मरण सबसे पहिले पढ़ता है।'' यदि वे संस्मरण, कान्तिकुमार जैन के हों तो वह पत्रिका खरीदने में भी संकोच नहीं करता। यादों के मैदान में धुआँधार बैटिंग करनेवाले कान्तिकुमार जैन विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से शीघ्र प्रकाश्य इस पुस्तक में भी, अपने सुपरिचित अन्दाज में, साहित्यकारों, सम्पादकों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, शिक्षाविदों और पत्रकारों से ही नहीं, स्थान, काल और सामाजिक मूल्यों से भी दो चार हो रहे हैं—कभी आघात करते हुए, कभी आघात झेलते हुए। इन संस्मरणों में रचनाकार ने साहित्यिक विधाओं की नियंत्रण रेखा का रौब मानने से इन्कार किया है। यही कारण है कि इन संस्मरणों में कहीं समीक्षा तो कहीं जीवनी, कहीं सामाजिक मूल्य तो कहीं लोक संस्कृति, कहीं इतिहास तो, कहीं दैनिक समाचार एक-दूसरे से गलबहियाँ डाले मिलते हैं—प्रयोगधर्मा संस्मरणों का बिल्कुल नया व्यक्तित्व। विधाओं की इस एलओसी का अतिक्रमण करने का परिणाम यह हुआ है कि इन संस्मरणों में नजीर, सुभद्राकुमारी चौहान और जयशंकर प्रसाद को जिस केन्द्रीयता से याद किया गया है, उसी से राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, नामवर सिंह, नगेन्द्र, गोपाल राय, धनंजय वर्मा जैसे समकालीनों को भी। स्मृतियों के बेहई मैदान में रचनाकार न किसी का लिहाज़ करता है, न ही स्वयं को बख्शाता है।

किसी भी लेखक को अपनी रचनात्मक विधा एकाध दिन में नहीं मिलती। कान्तिकुमार जैन को अपनी स्वकीय विधा अपने जीवन के आखिरी पड़ाव में अनायास ही मिली। वे 74 के हो गये हैं। अनुभव सम्पन्न, अध्ययन पक्व, भाषाधिकारी, ऊर्जाप्लावित अपने विश्वासों पर दृढ़। भारतीय विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों में व्याप्त आपाधापी बिल्कुल नये ढंग का संस्मरण है।

इस पुस्तक में हिन्दी के समकालीन परिदृश्य के भीतरी संसार पर भी बेहद तल्ख टिप्पणियाँ हैं, हिन्दी समीक्षकों की गिरोहबाजी और छिद्रान्वेषण प्रवृत्ति पर 'हिन्दी समीक्षकों की बिडाल राशि' की तुर्शी तो बालमुकुन्द गुप्त जैसे साहित्यकारों की याद दिलाती है। इस हाहाकारी आख्यान में श्रीनाथ सिंह भी हैं और नये युग के छीछड़ा परस्त तथाकथित समीक्षक भी। प्रो० जैन केवल संस्मरण ही नहीं लिखते, संस्मरणों की सैद्धान्तिकी भी गढ़ते हैं। पुस्तक में संकलित साक्षात्कारों में हिन्दी संस्मरणों का इतिहास ही नहीं, उसकी समस्याएँ, उसके संकोच भी हमारे सामने आते हैं।

हिन्दी का गद्य कितना हँसमुख हो सकता है, यह देखना हो तो 'अब तो बात फैल गई' पढ़नी होगी। गम्भीर से गम्भीर बात इतने सहज और खिलंदड़े भाव से कही जा सकती है, इसका प्रमाण भी इस पुस्तक में है।

यह पुस्तक पढ़ते हुए, आपको क्रिकेट खिलाड़ी धोनी की भी याद आयेगी और 'लगे रहो मुन्ना भाई' की भी। आप अपने आप को भूल जायेंगे। पाठकप्रियता को एक साहित्यिक मूल्य के रूप में स्थापित करती संस्मरणों के योद्धा की नयी पुस्तक विश्वविद्यालय प्रकाशन की सम्पूर्ण सुरुचि सम्पन्नता और निर्दोष भंगिमा के साथ। शीघ्र प्रकाश्य। हिन्दी क्षेत्र के पाठकों की मानसिकता, समझदारी और साहित्यिक अभिरुचि की पड़ताल करनेवाली एक ऐसी पुस्तक जिससे हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशकों, लेखकों और पाठकों को भी आत्ममंथन के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

शब्दों में वज़न होता है, ध्वनि होती है और आकृति होती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर आप एक ऐसा वाक्य लिख सकते हैं जो देखने तथा सुनने में अच्छा लगता है।

—सामरसेट मॉम

पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail: sales@vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

पुस्तक विमोचन

बाँए से : डॉ० रूबी शाह, डॉ० ए०के० जैन, डॉ० ऊषा बंसल, श्रीमती मृदुला रानी, डॉ० मधुलिका अग्रवाल, श्रीमती सरिता लखोटिया

महिला मण्डल, काशी की ओर से बुधवार, 1 फरवरी 2007 को आयोजित समारोह में बीएचयू के इतिहास विभाग की डॉ० उषा रानी बंसल की पुस्तक 'मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना' का विमोचन विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्रो० ए०के० जैन ने किया। इस अवसर पर जीव विज्ञानी प्रो० मधुलिका अग्रवाल ने 'पुष्प एवं पर्यावरण' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया। मण्डल की ओर से प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदी, मीरा अरोड़ा एवं प्रो० ए०के० जैन को सम्मानित किया गया।

स्वागत मण्डल की अध्यक्ष मृदुला रानी ने किया। संचालन रूबी शाह ने तथा धन्यवाद ज्ञापन सरिता लखोटिया ने किया।

'अथर्ववेद का काव्य' का लोकार्पण

'अथर्ववेद का काव्य' का लोकार्पण करते हुए प्रो० नवजीवन रस्तोगी (लखनऊ) तथा प्रो० डी०पी० सिंह, कुलपति डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह ने मुख्य अतिथि प्रो० नवजीवन रस्तोगी की उपस्थिति में डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी की कृति 'अथर्ववेद का काव्य' को लोकार्पित किया।

'दस्तावेज़' के असमिया अंक का लोकार्पण

गुवाहाटी में प्रख्यात हिन्दी साहित्यिक पत्रिका 'दस्तावेज़' के 113वें अंक, जो असमिया साहित्य पर केन्द्रित है, का लोकार्पण हुआ। लोकार्पण असमिया के प्रसिद्ध कवि श्री हरेकृष्ण डेका ने किया। इस अवसर पर 'दस्तावेज़' के सम्पादक और सुविख्यात कवि-आलोचक प्रो० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी भी उपस्थित थे। 'दस्तावेज़' के अतिथि सम्पादक प्रो० उदयभानु पाण्डेय ने बड़ी निष्ठा के साथ इस योजना को सम्पन्न किया है। इस सम्पादन में उनका सहयोग किया है—डॉ० शान्ति थापा ने। इस लोकार्पण समारोह में हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री प्रमोदकुमार तिवारी, एन०आई० आर०डी० के निदेशक श्री एन० उपाध्याय, यूको बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी, अलीगढ़ विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० प्रेमस्वरूप गुप्त, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० धर्मदेव तिवारी, उपनिदेशक डॉ० रुस्तम राय तथा असमिया लेखक सर्वश्री परागकुमार भट्टाचार्य, मीरा ठाकुर, किशोर कुमार जैन, विनोद रिंगानिया, नीलमकुमार, समीर तांती, दिनकरकुमार, नीलिमकुमार, अर्चना पुजारी, अनुपम कुमार, रवि गुप्त, मौसम कंदली, रत्नेश कुमार आदि भारी संख्या में असमिया और हिन्दी के प्रेमी उपस्थित थे।

एडवर्ड सईद और बौद्धिक विमर्श

साखी के लोकार्पण और 'एडवर्ड सईद और समकालीन बौद्धिक विमर्श' संगोष्ठी के अवसर पर अंग्रेजी के प्रसिद्ध आलोचक तथा कामनवेल्थ प्रो० हरीश त्रिवेदी को सम्मानित करते सदानंद शाही साथ में प्रसिद्ध विचारक राजनाथ तथा कला संकाय के डीन प्रो० सूर्यनारायण पाण्डेय एवं चौथीराम यादव

'प्राच्यवाद' के रूप में तीसरी दुनिया के साथ विकसित राष्ट्रों से संवाद कायम करने वाले बीसवीं सदी के विचारक एडवर्ड सईद पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रेमचंद साहित्य संस्थान, वाराणसी, हिन्दी विभाग, बीएचयू और भारत कला भवन, बीएचयू के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। यह आयोजन 'साखी' (सम्पादक : सदानंद शाही) के एडवर्ड सईद विशेषांक के लोकार्पण के साथ अत्यन्त ही सफलता और सार्थकता के साथ सम्पन्न हुआ।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि व वक्ता प्रो० हरीश त्रिवेदी ने एडवर्ड सईद को निस्संदेह विश्व बौद्धिक बिरादरी का एक प्रमुख विमर्शकार और विचारक बताया। प्रो० त्रिवेदी ने कहा कि एडवर्ड सईद ने अपनी 'ओरिएण्टलिज्म' की अवधारणा के तहत यूरोप की वर्चस्वशाली नीतियों और विनिर्मितियों की खुलकर आलोचना की। प्रो० त्रिवेदी ने 'साखी' के सईद विशेषांक की उत्कंठित हृदय से सराहना की और कहा कि हिन्दी में क्या अंग्रेजी में भी सईद पर एक जगह ऐसी सामग्री अब तक उपलब्ध नहीं थी।

यहाँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और हिन्दी विभाग में बुलाकर आपने मेरा मान बढ़ाया है। यहाँ के हिन्दी विभाग में आकर मुझे जो हर्ष हो रहा है और जो गर्व हो रहा है वह मैं आपसे कैसे प्रकट करूँ। यह जैसा संकेत दिया गया कि रामचन्द्र शुक्ल ने कहा था—हिन्दी साहित्य के इतिहास को सबसे पहले लिखते हुए, इसके पहले मिश्र-बन्धु विनोद था, उन्होंने जिस आदिकाल की स्थापना की थी वहीं आदिकाल आज तक चला आ रहा है। उसी प्रकार यह देश का हिन्दी का आदि विभाग है। इसका जो स्थान है वो कोई नहीं ले सकता और शुरू में जो इसका स्थान बना तब इसको आधार देने वाले शुक्लजी थे, श्यामसुन्दरदासजी थे, लाला भगवानदीन थे। वह परम्परा जिसको स्मरण करते हुए जिसके मन में थोड़ा भी हिन्दी के लिए स्थान है उसको रोमांच हो जाता है। यहाँ की जो विश्वविद्यालयी परम्परा है हिन्दी के अध्ययन की उसका जवाब कहीं नहीं है। बीसवीं शताब्दी में हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकार लखनऊ से आये हैं—यशपाल, अमृतलाल नागर, भगवतीचरण वर्मा वहीं से हैं और प्रेमचंद भी कुछ साल वहीं रहे हैं। हिन्दी के प्रमुख कवि इलाहाबाद से रहे हैं, छायावादी सभी कवि इलाहाबाद में थे और बनारस में ऐसा नहीं कि लिखने वाले कवि नहीं थे—प्रेमचंद यहीं थे, प्रसाद यहीं थे और पुरानी परम्परा में कबीर और तुलसी यहीं थे, लेकिन बीसवीं शताब्दी में हिन्दी साहित्य के बारे में किस प्रकार की बात की जाय इसका इतिहास उसकी समालोचना, इसका आधार यहाँ पड़ा है। हिन्दी विभाग द्वारा आमंत्रित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हिन्दी में भाषण देकर सन्तुलन अब बन रहा है। तो तरह-तरह से हर्ष है। मैं यहाँ आया।

एडवर्ड सईद के बारे में सबसे पहले यह कहना आवश्यक है कि वे हमारे युग की महान विभूतियों में से थे। जहाँ तक बौद्धिक विमर्श का प्रश्न है उनकी बराबरी के लोग बहुत कम हैं, उनके बराबरी में किसको रखूँगा? ग्राम्शी को रखूँ, फूको को या देरिदा को। ग्राम्शी उनसे पहले की पीढ़ी के हैं उनका उल्लेख ठीक नहीं। फूको और देरिदा को रखिए, मार्क्स को रख सकते हैं इसके अतिरिक्त और नहीं। उन्होंने इतना बड़ा काम किया वे युगपुरुष थे, वे युग की विभूति ही नहीं थे वे युगपुरुष थे।

निराला जयन्ती

नेहरू महाविद्यालय, पैलापुल, कछार (असम) में निराला जयन्ती पर आयोजित संगोष्ठी में हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री सुरेन्द्रनाथ मिश्र ने कहा—निराला काव्य का फलक विशाल एवं विस्तृत है। प्राकृतिक दृश्य एवं संवेदना संयुक्त उनकी प्रथम कविता 'जुही की कली' विशिष्ट है। वे अपने समय के संघर्षशील साहित्यकार थे, उनकी रचनाएँ इसकी प्रमाण है।'राम की शक्ति पूजा' राम ही नहीं अपितु निराला की शक्तिपूजा है। संगोष्ठी में भाग लेने वालों में प्रमुख थे—डॉ० अंजनीकुमार दुबे, श्री राजेन्द्रप्रसाद ग्वाला।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल स्मृति व्याख्यानमाला

आलोचना का स्वधर्म

बायें से : डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी, डॉ० ललित बिहारी गोस्वामी, डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, डॉ० देवेन्द्रकुमार सिंह गौतम

आलोचना का स्वधर्म - मंत्र द्रष्टा ऋषि के स्वधर्म जैसा है। इसीलिए आलोचना का कार्य करने से पूर्व यह आवश्यक है कि आलोचक का चित्त अन्त: बाह्य रूप से निर्मल, योग-सिद्ध, राग-द्वेषादि से मुक्त तथा लोकमन के साथ गहराई के साथ सम्पृक्त हो। ये विचार अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, भरतपुर द्वारा आयोजित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल स्मृति व्याख्यानमाला के छठवें आयोजन के मुख्य वक्ता के रूप में हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने व्यक्त किए।

विषय-प्रवर्तन करते हुए हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय के रीडर डॉ० देवेन्द्रकुमार सिंह गौतम ने कहा कि ''साहित्य में आलोचना अमृत के समान है। जैसे अमृत व्यक्ति को जीवनदान करता है वैसे ही आलोचना कृतियों को नये प्राणों से भरती है। शुक्लजी ने अपनी आलोचना से पद्मावत और जायसी दोनों को हिन्दी में शिखरता प्रदान की।''

डॉ० ललितबिहारी गोस्वामी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि साहित्य जीवन की व्याख्या है और आलोचना साहित्य की व्याख्या है। डॉ० तिवारी ने 'आलोचना के स्वधर्म' के अर्थ का उद्घाटन जिस विद्वता के साथ किया है, उसमें से नयी दृष्टि, नया प्रकाश मिलने वाला है।

कार्यक्रम का संचालन परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी ने किया।

विश्व परिप्रेक्ष्य में हिन्दी

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के हिन्दी विभाग में भाषा संस्कृति संस्थान के निदेशक डॉ० अम्बाशंकर नागर की अध्यक्षता में 10 जनवरी 2007 को आयोजित 'विश्व हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में मारीशस के महात्मा गाँधी संस्थान से पधारीं डॉ० अलका धनपत ने कहा—हिन्दी भाषा नहीं एक संस्कृति है, आज हिन्दी केवल भारत तक सीमित नहीं है, यह विश्व स्तर तक पहुँच चुकी है। आज जापान, अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका में लोग हिन्दी सीख रहे हैं।

विश्व हिन्दी दिवस के इस कार्यक्रम की संयोजिका विभागाध्यक्ष डॉ० मालती दुबे ने मुख्य अतिथि तथा अन्य आमंत्रित विद्वानों का परिचय देते हुए 'विश्व हिन्दी दिवस' मनाए जाने की प्रासंगिकता बताई।

संगोष्ठी में सर्वश्री डॉ० जसवंत पंड्या, डॉ० रामगोपाल सिंह, डॉ० विनोद पाण्डेय, डॉ० कान्तिभाई परमार, डॉ० शशि अरोरा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह का संचालन विभाग की अध्यापिका डॉ० दक्षा जानी ने किया और आभार डॉ० जसवंत पंड्या ने प्रदान किया।

साहित्य, संस्कृति एवं अध्यात्म की त्रैमासिक पत्रिका 'शब्दक्रम' के संयुक्तांक का विमोचन

'शब्दक्रम' के संयुक्तांक का विमोचन करते हुए राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डॉ० आर०डी० सैनी (दायें से द्वितीय)। डॉ० सैनी के बायीं ओर खड़े हैं कार्यक्रम के अध्यक्ष देवर्षि कलानाथ शास्त्री, दायीं ओर खड़े हैं 'शब्दक्रम' के संरक्षक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा तथा सबसे बायी ओर 'शब्दक्रम' के सम्पादक डॉ० दुष्यंत

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित साहित्य, संस्कृति एवं अध्यात्म की त्रैमासिक पत्रिका 'शब्दक्रम' के द्वितीय तथा तृतीय संयुक्तांक का विमोचन राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डॉ० आर०डी० सैनी ने अकादमी सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में किया। डॉ० आर०डी० सैनी ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि 'शब्दक्रम' राजस्थान से निकलने वाली एक श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका है जो प्रदेश में व्याप्त रिक्तता की पूर्ति में सहायक बनेगी।

'शब्दक्रम' के संरक्षक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा ने कहा कि 'शब्दक्रम' शब्द की अभिव्यक्ति, शब्द की साधना और संधान का समवेत क्रम बने, हमारी यही आकांक्षा है।

डॉ० आनन्द शर्मा ने कहा कि स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा का व्यक्तित्व विलक्षण था और वे अपनी साहित्यिक तेजस्विता एवं निष्पक्षता के लिए विख्यात थे। उनकी स्मृति में स्थापित संस्थान द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'शब्दक्रम' उन्हीं के व्यक्तित्व के अनुरूप एक श्रेष्ठ उपक्रम है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष मनीषी देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने कहा कि 'शब्दक्रम' के वर्तमान संयुक्तांक में लगभग सभी विधाओं में रचनाएँ प्रस्तुत की गई हैं तथा रचनाकारों के चित्र सहित विस्तृत परिचय भी दिया गया है। साहित्यिक पत्रिकाओं का कार्य सार्थक विचार-चर्चा है, 'शब्दक्रम' इसी की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है और इसका आध्यात्मिक तेवर इसे एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है।

'शब्दक्रम' के सम्पादक डॉ० दुष्यंत ने बताया कि 'शब्दक्रम' किसी विशेष वाद को नहीं, सिर्फ लेखकवाद को अपना आधार बना कर चलता है।

आचार्य रामचन्द्र वर्मा की 119वीं जयन्ती

स्वर्गीय आचार्य रामचन्द्र वर्मा (1889-1969) उस काल में पैदा हुए थे जब काशी में सभी तरह की प्रतिभाएँ पूर्ण रूप से सक्रिय थीं। कविता और नाटक में प्रसाद, उपन्यास में प्रेमचंद, आलोचना और इतिहास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, व्याकरण में पं० कामताप्रसाद गुरु, संघटन, अध्यापन तथा ग्रन्थ-सम्पादन में बाबू श्यामसुन्दर दास जैसी प्रतिभाएँ काम कर रही थीं। इन्हीं दिग्गजों के बीच में आचार्य रामचन्द्र वर्मा ने कोश, अनुवाद और भाषा शोधन के माध्यम से अपनी राह बनाई। उक्त विचार गोष्ठी में अध्यक्ष पद से डॉ० युगेश्वर ने व्यक्त किए। मनु शर्मा ने कहा कि आचार्य वर्मा प्रचार-प्रसार से दूर कोश का कार्य निरन्तर करते रहे। अनुवाद में भी उनकी गहरी रुचि थी और उन्होंने कई ग्रन्थों का अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं से अनुवाद किया। डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल उनके अनुवादों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे।

काशी विद्यापीठ के पूर्व आचार्य डॉ० लक्ष्मीशंकर गुप्त ने कहा कि शब्दों में काम करने की प्रवृत्ति तथा प्रेरणा मुझे वर्माजी के ग्रन्थ 'शब्द साधना' से मिली। वे मेरे जैसे अनेकों के शब्द-गुरु थे। अन्त में वर्माजी के भांजे और प्रसिद्ध कोशकार डॉ० बदरीनाथ कपूर ने वर्माजी की अनेक कृतियों पर प्रकाश डालते हुए उनके अनेक संस्मरण सुनाए तथा आगत अतिथियों को धन्यवाद दिया।

पुस्तक समीक्षा

शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

डॉ० कामताप्रसाद पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-551-X

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : सजिल्द : 150.00 अजिल्द : 100.00

प्रस्तुत ग्रन्थ 'शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन' शिक्षा एवं शिक्षण की अद्यतन अवधारणाओं को रेखांकित करते हुए उभरते नवीन सन्दर्भों में उनकी प्रयोज्यता एवं प्रासंगिकता को सुस्पष्ट ढंग से विश्लेषित रखता है। इसके तहत कुल बारह अध्यायों में मूल्यांकन एवं मापन के सम्प्रत्यय का विश्लेषण एवं विवरण, उनका विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में अनुप्रयोग एवं संगति, तथा मानक एवं निकष सन्दर्भित परीक्षणों के निर्माण की प्रक्रिया को सोदाहरण प्रस्तुत करता है। ग्रन्थ के अन्तिम अध्याय में निर्माणात्मक (फार्मेटिव) एवं संकलनात्मक (समेटिव) मूल्यांकन की अवधारणाओं को विस्तारपूर्वक समझाया गया है जिससे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इसकी उपादेयता एवं महत्त्व बढ़ जाता है। पुस्तक की भाषा सरल एवं बोधगम्य है तथा पूरी प्रस्तुति सटीक उदाहरणों के माध्यम से सम्बलित है।

निर्गुण रचनावली

छह खण्डों में, जिनमें निर्गुण के छह उपन्यासों के साथ उनकी 137 उपलब्ध मौलिक और 14 रूपांतरित कहानियाँ (रचना-काल के साथ), गीत, लेख, संस्मरण, पत्र और परिशिष्ट में दिए गए लेख संकलित हैं।

''हिन्दी आलोचना और शोध के लिए यह एक दुर्भाग्यपूर्ण खबर है कि बहुत-से पुराने लेखकों का साहित्य पुस्तकालयों में भी उपलब्ध नहीं है। द्विजेन्द्रनाथ मिश्र जैसे उल्लेखनीय कथाकार की रचनाओं की अनुपलब्धता चौंकाने वाला ही नहीं, हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के लिए निराश करनेवाला तथ्य है। इस पृष्ठभूमि में निर्गुण के समस्त कथा-साहित्य का 'निर्गुण रचनावली' के रूप में प्रकाशन हिन्दी प्रकाशन जगत् की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। यह रचनावली प्रत्येक पुस्तकालय के लिए क्रेय है।''

पेपरबैक संस्करण, मूल्य प्रत्येक खण्ड का रु० 300.00
सजिल्द संस्करण, मूल्य प्रत्येक खण्ड का रु० 500.00

—डॉ० गोपाल राय, सम्पादक, समीक्षा

पहल सम्मान 2006

ज्ञानेन्द्रपति को 'पहल सम्मान'

19 फरवरी को प्रतिष्ठित 'साहित्य अकादमी' सम्मान से लौटे कवि **ज्ञानेन्द्रपति** को शनिवार, 24 फरवरी 2007 को सारे देश से पधारे साहित्यकारों की उपस्थिति में अध्यक्ष केदारनाथ सिंह द्वारा नागरी नाटक मण्डली के प्रेक्षागृह में पहल सम्मान 2006 प्रदान किया गया।

रंगकर्मी व पत्रकार विश्वमोहन चंडोला ने प्रशस्ति वाचन किया और अतिथियों को पुण्य गुच्छ भेंटकर सम्मानित किया गया।

ज्ञानेन्द्रपति ने कहा—मेरे लिए यह क्षण भाव-विभूत कर देने वाला है। केदारजी और विजेन्द्रजी जैसे दिग्गजों के समक्ष मेरे लिए यह सम्मान साहित्य समाज की शुभकामना की तरह है। आज हमारे पास अनुभूति की स्वतंत्रता के अवसर कम होते जा रहे हैं। मीडिया चाक्षुष बिम्बों के जरिये हमारी सोच को बेतरह प्रभावित कर रहा है। हमारी आँखें खुली होने के बाद बहुत कुछ नहीं देख पा रही हैं। वे वही देख रही हैं जो मीडिया (खासकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) हमें दिखा रहा है। यह हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौती है जो एक दशक पहले तक नहीं थी। आपातकाल के दौरान भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग कहीं न कहीं हो रहा था। माना कि अखबार और अन्य मीडिया उन दिनों चुप थे लेकिन नुक्कड़ों पर लोकगीतों, कविताओं के जरिये नागार्जुन जैसे कवियों की अगुवाई में अनेक नौजवान अपनी बात कह ही रहे थे। लेकिन आज स्थिति काफी बदल गयी है। आज हमारी सोच भी ग्लोबल बाजार की शक्तियाँ नियंत्रित कर रही हैं। ऐसे में आज के रचनाकार कलाकार के लिए अपनी वस्तुनिष्ठता बनाये रखने की भारी चुनौती है।

अध्यक्षता कर रहे डॉ० केदारनाथ सिंह ने कहा—डॉ० ज्ञानेन्द्रपति ने बहुत सारे जोखिम उठाकर कविता का नया चेहरा तैयार किया। जो किसी से नहीं मिलता। हजारों की भीड़ में भी कविता का वह चेहरा दूर से पहचान में आ जाता है। त्रिलोचन के जाने और धूमिल के असमय 'चले जाने' के बाद बनारस के साहित्यिक समाज में कुछ ठहराव सा आ गया था। झारखण्ड में जन्म लेकर पटना में पनपने वाले ज्ञानेन्द्र ने बनारस को अपना लिया। न सिर्फ अपनाया बल्कि साहित्यिक समाज में आए ठहराव को गतिशील करने के लिए यहीं ठहर गए। विलक्षणता ऐसी कि उन्होंने असुन्दर को भी विलक्षण काव्य भंगिमाएँ प्रदान की हैं।

ज्ञानरंजन ने कवि ज्ञानेन्द्रपति का अलग ही शब्दचित्र उकेरा। कहा ज्ञानेन्द्रपति अब भी शहर का खनिज टटोल रहे हैं। बनारस में उन्हें बहुत कुछ मिला मगर जितना मिला है उससे भी कहीं अधिक पाने की पिपासा उनमें दिखाई पड़ती है। हिंसा, लूट, असहनीय अत्याचार के बीच भी इस शहर में बहुत कुछ बचा हुआ है। उसी बचे हुए की तलाश जारी है। जो इस शहर को अपना स्पर्श देता है यह शहर भी उसे अपना स्पर्श देता है। इसका उदाहरण ज्ञानेन्द्रपति हैं। बैलों की तरह उछलने वाली आलोचना भी उन्हें डिगा नहीं सकी।

साहित्यकारों का महाकुम्भ

इतने दिनों बाद मिले हो जरा हाथ तो मिला लो

वाराणसी में साधु समाज का समागम समाप्त हुआ नहीं कि 'पहल' के माध्यम से साहित्यकार-समागम हो गया। उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम से पधारे साहित्यकारों ने कहा—इतने दिनों बाद मिले हैं आओ हाथ तो मिला लो।

केदारनाथ सिंह, मैनेजर पाण्डेय, मंगलेश डबराल, लीलाधर जगूड़ी, विजेन्द्र, अग्निशेखर, असद जैदी, विनय दुबे, पंकज चतुर्वेदी, राजेश जोशी, विभूषण बलि सिंह चीमा (उत्तराखण्ड), कुमार मुकुल, हरिओम, राजोरिया, अनिल त्रिपाठी, मलय, मदन कश्यप, प्रेम रघुवंशी, नरेश चन्द्राकर, बसन्त त्रिपाठी, कात्यायनी, निर्मला गर्ग, इब्बार रब्बी, यतीन्द्र मिश्र, आलोक श्रीवास्तव, देवीप्रसाद मिश्र, बुद्धिनाथ मिश्र, मंगलमूर्ति तथा अन्य अनेक साहित्यकार। स्थानीय साहित्यकारों में डॉ० बच्चन सिंह, आर०के० मिश्र, काशीनाथ सिंह, श्रीप्रकाश शुक्ल, अरविन्द चतुर्वेद आदि सम्मिलित हुए, किन्तु अतिथि साहित्यकारों की ही भागीदारी विशेष रही। काशी में बहुत समय बाद साहित्यकारों का महाकुम्भ हुआ।

दूसरे दिन रविवार 25 फरवरी 2007 को पहल काव्यपाठ हुआ जिसमें अनेक कवियों ने भाग लिया।

आकाशचारिणी

अरुणकुमार शर्मा

मूल्य : 180.00

रहस्य रोमांचयुक्त 17 कहानियों का संग्रह। अविश्वसनीय किन्तु अतिशयोक्ति से दूर। भाषा में प्राञ्जलता और रोचकता।

वितरक :
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पुस्तक-प्राप्ति

अज्ञेय के उपन्यास

डॉ० हितेन्द्र मिश्र

संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, मूल्य : 160 रुपये

प्रेमचंद के बाद अज्ञेय ने उपन्यास को नई दिशा दी। लेखक ने अज्ञेय के उपन्यासों की विस्तृत किन्तु गम्भीर समीक्षा की है।

नग्म-ए-इर्फान

टी०एन० श्रीवास्तव

प्रकाशक : लेखक स्वयं

एस० 29/6ए-के-3, प्रतापनगर कालोनी, टकटकपुर, वाराणसी-2

मूल्य : 300 रुपये

गीता का उर्दू में काव्यात्मक अनुवाद, उर्दू लिपि के साथ नागरी लिपि में भी। अनुवादक ने गीता के मर्म का काव्य रूपांतर कर गीता के प्रति अपनी निष्ठा और साहस की अभिव्यक्ति की है।

एक था राजा एक थी रानी : (हिमाचल की लोककथा) ध्यान सिंह धुना, प्रकाशक : नखदार्जन प्रकाशन, शिमला-06।

लोककथा श्रेणियों का नहीं, बल्कि जनता का साहित्य है। लोककथा चलती है, एक संदेश दे जाती है। —श्रीनिवास जोशी

स्वप्न की नदी सुबह की धूप : (कविता संग्रह) रामेश्वर पाण्डेय 'पतंग', लेखनी प्रकाशन, पटना, मूल्य : 100 रुपये

विरह-वेदना और जीवन-दर्शन : (कविता) रामेश्वर पाण्डेय 'पतंग', मगध प्रकाशन, गाजियाबाद, मूल्य : 50 रुपये।

श्री विद्या उपासक : (श्री हरिहर अभिनन्दन) सम्पादक : स्वामी सदानन्द तीर्थ, श्री विद्या भवन, मथुरा, मूल्य : 300 रुपये।

कथनी-करनी : डॉ० रामकृष्ण सराफ, मूल्य : 75 रुपये।

संस्कृति चिन्तनम् : डॉ० रामकृष्ण सराफ, आदित्य प्रकाशन, ई-4/64 अरेरा कालोना, भोपाल-462016, मूल्य : 80 रुपये।

महा सू देवता : श्याम सिंह घुना, नख दर्जन प्रकाशन, द्वारा मेहर कुंज, संजौली, शिमला-06, मूल्य : 100 रुपये।

विशिष्ट पत्र-पत्रिका

साखी : (प्रेमचंद साहित्य संस्थान का त्रैमासिक), अंक 13-14, जुलाई-दिसम्बर 2006, एडवर्ड सईद पर केन्द्रित, सम्पादक : डॉ० सदानन्द शाही, एच 2/3, नरिया (बीएचयू), वाराणसी-5

वर्तमान साहित्य : नवम्बर-दिसम्बर 2006, 1857 जनप्रतिरोध, सम्पादक : कुंवरपाल सिंह, नमिता सिंह, 28 एमआईजी, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-202 001

शब्दम् : अध्यक्ष : श्रीमती किरण बजाज, हिन्द लैम्पस् परिसर, शिकोहाबाद से प्रकाशित, 201, मेकर टावर-ए, कफ परेड, मुम्बई-400 005

अक्षरम् संगोष्ठी (हिन्दी की अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका) : सम्पादक : नरेश शांडिल्य, ए-5 मनसाराम पार्क, नई दिल्ली-59

मंथन (साहित्य विशेषांक) : सम्पादक : महेश अग्रवाल, अग्रसेन टावर, राँची-01

लोकगंगा (मासिक) : सम्पादक : योगेन्द्रचन्द्र बहुगुणा, पो० गुमानीमाला, देहरादून-249 204

सहकार (त्रैमासिक, नवम्बर 2006) : धार्मिक विडम्बना अंक, सम्पादक : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', 362, सिविल लाइन्स (कल्याणी) उन्नाव।

प्रभात खबर : (दीपावली विशेषांक) सम्पादक : हरिवंश, 15-पी, कोकर इण्डस्ट्रियल एरिया, कोकर राँची।

नमन, आलेख, परिचर्चा-1, स्मृति परिचर्चा-2, धरोहर के अन्तर्गत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सामग्री। सुन्दर सचित्र प्रकाशन, दैनिक पत्रों ने दीपावली विशेषांक का प्रकाशन बन्द कर दिया, 'प्रभात खबर' इस दीपावली विशेषांक की परम्परा को अग्रसर किये हुए है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 8 **मार्च 2007** **अंक : 3**

प्रधान संपादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो० बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O.Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)